पौराणिक कृष्ण पर—वैदिक कृष्ण [बजवाब]

सरकार के न्याय की परीक्षा

३५८९
दि.पु. .... ख-पु-४
दिनांक..................

मैं यह पुस्तक खुशी से नहीं लिख रहा अपितु रंज से, मैं यह पुस्तक किसी का दिल दुखाने के लिये नहीं लिख रहा अपितु कर्तव्य पालन के लिये। मैं यह पुस्तक प्रचार के लिये नहीं लिख रहा अपितु सरकार के न्याय की परीक्षा के लिये। वह इस प्रकार से कि अनुमान सन् १९२६ में जब महाशय राजपाल जी रंगीला रसूल वाले अभियोग में हाईकोर्ट से साफ़ बरी हो गये, तो इस बारे में वर्तमान क़ानून को अपूर्ण समझ कर सरकार ने एक नया क़ानून बनाया। जिसका नाम था "कानून तहफ्फ़ुज़ नामूस-बज़ुर्गानेदीन" अर्थात् धर्म के नेताओं की प्रतिष्ठा की रक्षा करने वाला कानून। इस कानून के आधीन उसी समय "वर्तमान अमृतसर" पत्र के सम्पादक को दण्ड दिया गया। उस समय के पश्चात् फिर पता नहीं लगा कि वह कानून किस अलमारी में बन्द कर दिया गया। जहां तक हमें ज्ञान है, उस समय के पश्चात् सरकार ने किसी भी अपराधी को इस कानून के आधीन दण्ड देने का कष्ट नहीं उठाया। हालांकि आर्य समाज के विरोधियों ने दर्जनों पुस्तकें आर्य समाज और उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी

गुरुकुल कांगड़ी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 2861
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

की मान हानि करने के लिये लिख डालीं। उदाहरणार्थ कुछ पुस्तकें तथा उनमें से मान हानि करने वाले वाक्य हम नमूने के तौर पर नीचे लिखते हैं।

(१) दयानन्द भाव चित्रावली

यह पुस्तक प्रथमवार सन् १९२६ ईसवी में लाइल पुर से पंडित शम्भुदयाल त्रिशूल ने प्रकाशित की और अब तक भी वह बराबर प्रकाशित हो रही है, और उसके मिलने का विज्ञापन पं० माधवाचार्य्य जी शास्त्री, कौल-जिला करनाल निवासी ने अपनी नवीन पुस्तक "पं० बुद्धदेव का जूता ऋषि दयानन्द के शिर पर" के अन्तिम पृष्ठ पांक्त १५ पर दिया है। यह पुस्तक क्या है, ऋषि दयानन्द जी की प्रत्यक्ष मान हानि है। इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द जी के कल्पित नंगे गंदे तथा मान हानि करने वाले चित्र दिये गये है। उदाहरणार्थ

(क) टाइटिल पेज में स्वामी दयानन्द जी बकरे के अण्डकोष पकड़ कर दूध निकाल रहे हैं।

(ख) चित्र नं० २ में स्वामी दयानन्द जी हुक्का पी रहे हैं और उनके लिये भांग रगड़ी जा रही है।

(ग) चित्र नं० ३ में स्वामी जी पाओं में घुँगरू बांध कर नाच रहे हैं तथा पं० लेखराम जी और महात्मा मुन्शीराम जी उनके साथ सारंगी और तबला बजा रहे हैं।

(घ) चित्र नं० ४ में स्वामी दयानन्द जी गुदा द्वारा सांप पकड़ रहे हैं।

(ङ) चित्र नं० ५ में स्वामी जी गोवध की आज्ञा दे रहे हैं।

(च) चित्र नं० ९ में स्वामी जी बैल से मैथुन कर रहे हैं।

(२)पण्डित बुद्धदेव का जूता
ऋषि दयानन्द के शिर पर

यह पुस्तक पं० माधवाचार्य कौल, जिला करनाल निवासी ने अभी अभी छपवाई है। इस पुस्तक के टाइटिल पेज पर ऋषि दयानन्द की मान हानि करने वाली तसवीर दी गई है। जिसमें ऋषि दयानन्द जी के शिर पर जूता पड़ता हुआ दिखाया गया है, तथा पुस्तक के अन्दर निम्न लिखित मान हानि करने वाले वाक्य मौजूद हैं।

(क) लीजिये यह स्वामी जी का चित्र है, मैं इसको जूता मारता हूँ। (पृ० ३७ पं० ८)

(ख) श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती के चित्र को लातों से ठुकरा दिया। (पृ० ३९ पं० ३)

(ग) स्वामी जी के चित्र पर हमारे सामने जूते लगाओ। (पृ० ३९ पं० १८)

(घ) अपने पूज्य बुजुर्गों की तसवीरों पर जूते लगाना शुरू करेंगे। (पृ० ४१ पं० ८)

(ङ) पात्रों के नीचे स्वामी जी की तसवीर को रख कर धप धप धप कर ही तो दिया। (पृ० ४२ पं १३)

(च) पंडित बुद्धदेव का जूता ऋषि दयानन्द के शिर पड़ा। (पृ० ४२ पं० १७)

(छ) महाशय बुद्धदेव ने स्वामी दयानन्द की तसवीर को जूता लगाने में गुरु परम्परा को ही पूरा किया। (पृ० ५६ पं० १८)

(ज) ऋषि दयानन्द की तसवीर पर भी जूता मार देंगे। (पृ० ६१ पं० २०)

(झ) फी जूता एक रुपया इनाम भी दिया जावेगा। (पृ० ७३ पं० १४)

(ञ) लीजिये स्वामी जी की तसवीर को जूता मारता हूं। (पृ० ७४ पं० १)

(ट) और न ही स्वामी दयानन्द का कापडी खानदान में पैदा होना छिप सकता है। (पृ० ७७ पं० १४)

(३) कलियुग इन्सान के लिबास में

उर्फ असली संगीत दयानन्द

यह पुस्तक पं० गोपाल मिश्र जी हरियाना जि० हुशियारपुर निवासी ने छपवाई है। इस पुस्तक में स्वामी जी को भर पेट गालियां दी गई हैं। उदाहरणार्थ कुछ वाक्य निम्न प्रकार से हैं।

(क) अन्धे बिरजानन्द का जादू ऐसा काम कर रहा है कि जो इस सोसाइटी में शामिल होता है वह फौरन अन्धा हो जाता है। (पृ० ८ पं० १५)

(ख) ऋषि बोध की कहानी फरजी है। घर से निकलने की वजह स्वामी जी का बद चलन होना था। देश और धर्म के लिये उसने कोई कुर्बानी नहीं की। बल्कि इस ढोंग से लाखों रुपये कमाये और ऐश में बसर की। वह झूठा और फरेबी था। जिसकी मां का पता न बाप का। ऐसे शख्स की तौहीन मेरे ख्याल में

तो किसी लफ़्ज़ से हो ही नहीं सकती। मौत की वजह ज़हर नहीं, बल्कि करतूतें थीं। (पृ० १० पं० ७)

(ग) किसी शख़्स ने कुत्ता या गधा रख छोड़ा हो उसे चाचा कह कर पुकारता हो। (पृ० ११ पं० ४)

(घ) स्वामी दयानन्द को ऋषि महर्षि देवता भगवान और महा भगवान तक लिखते हुये किस तरह गीदड़ों का पाखाना उन्होंने पहाड़ पर चढ़ाया है। (पृ० ११ पं० १३)

(ङ) स्वामी दयानन्द को कापडी होने की वजह से झांसा देना खूब आता है (पृ० १७ पं० ६)

(च) स्वामी जी अपने बाप की ब्याहता बीबी से पैदा हुये या उस दाशता कापडी औरत से। (पृ० १६ पं० ११)

(छ) यह शख़्श वैसे तो बहुत झूठ बोलता था। लेकिन इस गप्प से हिन्दू कौम की जड़ें कट गई हैं। (पृ० २२ पं० १५)

(ज) जिस ज़माने में काठिया वाड़ के ख़ुश्क इलाक़ा में यह नास्तिक पैदा हुआ। (पृ० २३ पं० १३)

(झ) स्वामी जी को जावजा.....पढ़ते रहे, जिसके वह बद कलाम होने की वजह से मुस्तिहक थे। (पृ० ३४ पं० १५)

(ञ) बचपन में स्वामी जी का चाल चलन अच्छा नहीं था। (पृ० ३६ पं० १८)

(ट) दयानन्द सा कपूत जनने की वजह से हिन्दू जाति का सर्व नाश हो गया है। (पृ० ५६ पं० ५)

(ठ) वह बेशरम था। बेहया था। ढीठ था। शरारती था। फ़सादी था। (पृ० ५७ पं० १)

(ङ) दयानन्द की जलील मौत का नक़शा मैंने इरादतन अगले ट्रैक्ट के लिये रख छोड़ा है। (पृ० ५८ पं ७)

(४) शिव पूजा और दयानन्द की तालीम

यह किताब भी पं० गोपाल मिश्र हरियानवी ने हाल ही में निकाली है। इस किताब में ऋषि दयानन्द जी की शान में जो अपमान जनक वाक्य लिखे गये हैं वे निम्न प्रकार से हैं।

(क) वह शरारती था। दरसगाहों को बदमुआशी के अड्डे क़रार देगा। (पृ० ६ पं० ७)

(ख) लाखों ऐसे उल्लू पैदा हो जायेंगे जो द १ बारह साल के बच्चे की इस बेवकूफी को बोध का नाम देकर देवस्थानों को पाखण्ड के किले कहेंगे।

(ग) इस शरारत के बानी स्वामी दयानन्द ने मूर्तिपूजा पर फ़िज़ूल ऐतराज़ात किये। (पृ० ७ पं० २०)

(घ) बोध हासिल होने के बाद बुद्धू ने इस धार्मिक विषय पर किस किस्म के ख्यालात का इज़हार किया है। (पृ० १० पं० ३)

(ङ) किसी हिन्दू के वीरज से ऐसा कपूत पैदा नहीं हो सकता जो अपने माता पिता या गुरु के इष्टदेव के खिलाफ इस किस्म के गन्दे जुमले लिख सके। (पृ० १८ पं० १३)

(च) महर्षि कुव्वत बाह के कमज़ोर हो जाने पर कुश्ता अब-अबरक फांकते और पारा की गोलियां खाते नज़र आयेंगे। महबूबा का गैर की बगल में बैठना बरदाश्त नहीं कर सके। मायूस) होकर वह खुद बखुद चाऐ लण्डन ही चली जाय (पृ० ४३ पं० ५

(छ) इस किस्म के धोके बाज को ऋषि कहने से पचीस करोड़ हिन्दुओं के दिल मजरूह होते हैं। (पृ० ४४ पं०)

(ज) मैं तो रमाबाई की लड़की को भी जो अभी जिन्दा है योग का एक करिश्मा ही समझता हूँ। (पृ० ४५ पं० २०)

(५) राम पूजा और शैतान की तालीम

यह पुस्तक भी हाल ही में गोपाल मिश्र हरियानवी ने बनाई है। इस पुस्तक में जो महर्षि स्वामी दयानन्द जी की शान में अपमान जनक वाक्य हैं वे निम्न प्रकार से हैं।

(क) स्वामी जी यकीनी तौर हरि भजन कापडी की औरत के पेट से पैदा हुये, जो बराय नियोग अम्बा शंकर के पास आइ हुई थी। स्वामी जी औदीच्य ब्राह्मण थे। बीरज के लिहाज से वह अम्बा शंकर के बेटे थे। (पृ० ४९ पं० २)

(ख) स्वामी जी का जमीर ही ऐसा था कि वह नमक खाकर हलाल करना गुनाह समझते थे। (पृ० ५६ पं० १६)

(ग) मुल्क वालों का रुपया धर्म के नाम पर इकट्ठा करके नसवार सूंघने वालों, भंग पीने वालों और एक माह पास रखने के एवज रंडियों को सौ सौ रुपया फ़ीस देने वालों को मुल्क और कौम के लिये लानत ख्याल करता हूँ। (पृ० ५६ पं० १६)

(घ) ब्रह्मचर्य के खाना में सिफर गृहस्थ के खाना में सिफर बानप्रस्थ के खाना में सिफर सन्यासी की जिन्दगी इतनी स्याह कि सारे मुल्क में बजाय शान्ति के फ़िसाद की आग भड़का दी।

(पृ० ६६ पं० १४)

(ङ) जिनका जरनैल नन्ही के हाथों शहीद हुवा (पृ०६२पं०६)

(च) हमें ताज़ा ऋषि की मां के मुत्तल्लिके तो दरियाफ्त कर लेना चाहिये जो बच्चा पेट में लिये दिन को हरिभजन के घर और रात को अम्बशंकर के पास सोती थी (पृ० ९३ पं० ९)

(छ) बैल मेंढे से किया करता था वह भोगो विलास।
था ब्रह्मचारी दयानन्द या कि कंजर देखिये।
रमाबाई को दुशाले में सुलाता था ऋषि।
ऐसे ज्ञानी को बके जाते हो लीडर देखिये॥
मां के जेवर को चुरा कर भाग जावे जो खबीस।
ऐसे घाती चोर को कहते हो रहबर देखिये॥

(पृ० ९८ पं० ३)

(ज) ले हाथ में जूता स्वामी की तसवीर को उससे पूज जरा।

(पृ० १०३ पं० ३)

(झ) स्वामी दयानन्द ने विषय सम्बन्धी सभी प्रकार का विवेचन किया था। इसलिये सत्यार्थ प्रकाश में योनी संकोचन वीर्य आकर्षण विधि सालम मिश्री के नुस्खे का प्रयोग लिखा—

(पृ० १२६ पं० ५)

(ञ) अब तो थी उसकी काबू में वह सैदे बेनवा।
बस फिर क्या था उसके थी आगोश में वह परी॥

(पृ० १३४ पं० १२)

हमने इन पुस्तकों में से बहुत थोड़े से वाक्य नमूने के तौर से चुन कर यहां पर दे दिये हैं। वरना इन किताबों में आर्य-

समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द की शान में अपमानजनक वाक्य इसस हजारों गुणा मौजूद हैं। कौन आर्यसमाजी ऐसा होगा कि महर्षि दयानन्द जी की शान में इस प्रकार के बेहूदा अपमान-जनक वाक्यों को पढ़ या सुन कर जिसका हृदय छलनी २ न हो जाय या जिसका खून जोश में न आ जाय ये किताबें क्या हैं मानों गैरतमन्द आर्य-समाजियों की गैरत को एक प्रकार का चैलैंज हैं। यदि इनही किताबों के लिखने वाले यही अपमान जनक वाक्य किसी और गैरतमन्द कौम के ऋषि पैगम्बर या प्रवर्तक के विषय में लिख देते तो वे राजपाल की भांति आज से बहुत दिन पहिले मौत के घाट उतार दिये जाते। किन्तु आर्य-समाज शान्ति प्रिय है। और आर्य-समाज की संस्थायें शान्ति पूर्वक ही धर्म के प्रचार में लगी हुई हैं। वे कानून को हाथ में लेने की आज्ञा नहीं देतीं। अतः आर्य-समाजी तथा आर्यसमाजों ने अपने पूज्य प्यारे महर्षि स्वामी दयानन्द जी की शान में इस प्रकार के अपमान जनक वाक्यों को पढ़ते सुनते हुवे भी अपने जिगर पर पत्थर रख कर इन पुस्तकों के विषय में समाचार पत्र द्वारा प्रोटस्ट के तौर से प्रस्ताव पास करके गवर्नमेंट से इन पुस्तकों की जबती तथा ऋषि दयानन्द जी को अपमानित करने वालों पर मुकदमा चलाने की प्रार्थना की। किन्तु अभी तक भी सरकार के कान पर जूं तक भी नहीं रेंगी। आखिर हमें यह विश्वास हो गया कि सरकार ने यह कानून आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षी स्वामी दयानन्द जी की मान रक्षा के लिये नहीं बनाया।

अपितु आर्यसमाज की तक़रीरों और तहरीरों को बन्द करने के लिये ही बनाया है। एसा विश्वास करने के पश्चात् गैरतमन्द आर्य-युवकों की ओर से पहिलाक़दम इन सम्पूर्ण पुस्तकों का यथा तथा उत्तर दिया जाना ही हो सकता है। जिसके लिये विवश होकर हमने कलम उठाई है। जिसका परिणाम यह पुस्तक सरकार तथा जनता के सामने मौजूद है। इस पुस्तक में जो पुराण तथा पौराणिक ग्रन्थों के प्रमाण दिये गये हैं उन प्रमाणों के देने से हमारा मक़सद यह ज़ाहिर करना है कि "इन पौराणिक पाजियों की बुजुर्गों को बदनाम करने की यह नई आदत नहीं है। बल्कि इनको यह पुराना मर्ज है। इन लोगों ने पहिले भी ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, राम, कृष्ण, अनसूया, बृहस्पति, ममता, इन्द्र, कौशल्या, अग्नि, वायु, वसिष्ठ, ऋष्यश्रृंग, कणाद, गौतम, अहल्या, सूर्य, माण्डूक्य, विश्वामित्र, देवयानी, कच, शुक्राचार्य, व्यास, द्रोणाचार्य पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश मित्र, वरुण, हनुमान, अर्जुन, आदि ऋषि महर्षि महात्मा योगीराज, त्यागी, सदाचारी धर्मात्मा वेदवेता, देवी देवताओं को कलंकित करने के लिये उन पर शराब पीने मांस खाने व्यभिचार करने झूठ बोलने चोरी करने जुवा खेलने गर्भघात तथा गोवध करने तक के कलंक लगाये हैं। जिसके सबूत में अष्टादश पुराण तथा अन्य पौराणिक ग्रन्थ मौजूद हैं। उस समय स्वामी शंकराचार्य जी ने इन पापी पाखण्डी बाम मार्गी धूर्तों को जहाजों में बिठा बिठा कर समुद्र में डुबोने की सजा दी। अतः जनता को चाहिये कि इन वेद विरुद्ध

ऋषि निन्दक दुराचार प्रवर्तक अष्टादश पुराणों तथा अन्य पौराणिक ग्रन्थों का परित्याग करके ईश्वरीय ज्ञान धर्म प्रवर्तक अखिल धर्म के मूल वेद तथा वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करके तदनुकूल आचरण करे।" अब हम देखेंगे कि सरकार हमारी इस जवाबी किताब के साथ क्या सलूक करती है हम डंके की चोट घोषणा करते हैं कि उपरोक्त पुस्तकों में क़तई फरजी और बनावटी तसवीरें दी गई हैं और स्वामी जी के लेखों का अधूरा पेश करके कतई गलत नतीजे निकाले गये हैं। यद्यपि हम पुराणों को वेद विरुद्ध होने से गलत तसलीम करते हैं तथापि इस पुस्तक में पुराणों के कतई ठीक प्रमाण दिये गये हैं और उनका ठीक २ अर्थ करके तदनुकूल चित्र बनाये गये हैं। फिर भी यदि सरकार उपरोक्त पुस्तकों के साथ २ हमारी इस पुस्तक को भी जब्त करले। या उपरोक्त पुस्तकों के लेखकों के साथ २ हमारे ऊपर मुकदमा भी चलाये तो हमें कतई रंज न होगा। और यदि उपरोक्त पुस्तकों के साथ २ हमारी पुस्तक भी चलती रहे तो भी हमें सरकार से शिकायत न होगी। किन्तु यदि सरकार उपरोक्त पुस्तकों तथा उनके लेखकों को नजर अन्दाज करके हमारी पुस्तक या हमारे विरुद्ध यकतरफा कारंवाई करने तैयार होगई तो हमारा विश्वास दृढ़ हो जावेगा कि सरकार का इनसाफ इमतिहान में फेल हो चुका है ऐसी सूरत में सरकार के न्याय से मायूस होकर यदि किसी गैरतमन्द आर्य-युवक ने दूसरा कदम उठा लिया और कानून को हाथ में लेकर उपर्युक्त पुस्तकों के लेखकों का स्वयं दण्ड देने का अफसोस नाक काम कर दिखाया तो उसका उत्तर दायित्व भी हमारे पर नहीं अपितु सरकार पर ही होगा।

प्रकाशक—

एक गैरतमन्द आर्य-युवक

मूर्ति पर जूता

"पण्डित बुद्धदेव का जूता ऋषि दयानन्द के शिर पर" नामक पुस्तक के कर्ता ने अपनी पुस्तक के आरम्भ में वह दक्षिण का शास्त्रार्थ तोड़ मरोड़ कर अपने अनुकूल बनाने का यत्न किया है। जो पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार तथा पं० माधवाचार्य के मध्य हुआ था। किन्तु काफी आत्म हत्या के बावजूद वह शास्त्रार्थ को अपना पक्षपोषक नहीं बना सका। इस शास्त्रार्थ का एक दृष्टि से पढ़ कर ही प्रत्येक मनुष्य के सामने मूर्ति पूजा की निर्बलता नाचने लग जाती है। हम इस पुस्तक में शास्त्रार्थ की आलोचना नहीं करेंगे। जिन सज्जनों को मूर्ति पूजा सम्बन्धी विषय के अधिक नग्न रूप में देखने की लालसा हो वे सत्यार्थ प्रकाश भास्कर प्रकाश "वैदिक तोप" तथा "पौराणिक पोल प्रकाश" के मूर्ति पूजा प्रकरण को पढ़ने की कृपा करें। हम इस पुस्तक में केवल उस शास्त्रार्थ में आये हुये "जूता काण्ड" की ही समालोचना करेंगे। हमारे विचार में इस प्रकार का प्रश्न करना तथा उसका इस भांति उत्तर देना दोनों को ही न्याय शास्त्र के विरुद्ध होने से वाद का दरजा नहीं दिया जा सकता। अपितु इस प्रकार का प्रश्नोत्तर जल्प और वितण्डा मात्र ही है। इस प्रश्न का उत्तर हमारे सिद्धान्तानुसार इस प्रकार हो सकता है। जैसे कि—

प्रश्न—आर्य समाजी लोग स्वामी दयानन्द जी की मूर्ति की

पूजा करते हैं। यदि नहीं करते तो वे मूर्ति पर जूता मार कर दिखलावें।

उत्तर—आर्य समाज परमात्मा के स्थान में किसी भी चीज़ की पूजा करने को वेद विरुद्ध होने से पाप मानता है। हां आर्य समाज मूर्तियों को कौमी यादगार मानता है और उनका उपयोग इस प्रकार से मानता है कि बच्चों को बजुर्गों की तसवीर दिखला कर और उनका जीवन चरित्र बतला कर वैसा ही बनने की शिक्षा दी जावे। अतः मूर्ति पर जूता मारना मूर्ति का दुरुपयोग होने से अविद्या जन्य, सिद्धान्त विरुद्ध, शिष्टाचार धर्म और नीति के भी विरुद्ध मानता है। इसी प्रकार के कार्य को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान, मन्त्री, अंतरंग सभा और सार्व देशिक सभा ने भी सर्व सम्मति से अनुचित करार दिया है और आर्यसमाज की दृष्टि में इस प्रकार का प्रश्न भी न्याय शास्त्र के विरुद्ध होने से निर्मूल है। ऐसे ऐसे निर्मूल प्रश्न तो कोई भी किसी पर कर सकता है जैसे कोई आदमी प्रश्न करता है कि "आप लोग पाखाने और पेशाब की पूजा करते हो। यदि नहीं करते तो पाखाने को खाकर और पेशाब को पीकर दिखावें" तुम्हारे अपनी मां बहिन और बेटी के साथ नाजाइज़ तअल्लुकात है यदि नहीं तो उनको सभा में बुलाकर उनके हलफ़िया बयान करवाओ। आप पराई स्त्री को माता के समान नहीं समझते यदि समझते हैं, तो फलां स्त्री का स्तन मुख में चूस कर दिखलाओ। आप अपने घर-बार, मेज, कुरसी, कपड़े, चारपाई, आदि सब की पूजा करते हैं,

यदि नहीं करते तो इन सब को दियासलाई लगा कर दिखलाओ। आप पराई आत्मा को अपनी आत्मा के समान नहीं समझते यदि समझते हैं ता दूसरे पुरुष को अपनी स्त्री के पास जाने की आज्ञा देकर दिखाओ। इत्यादि इत्यादि अनेक प्रतिज्ञायें की जा सकती हैं। किन्तु ये सम्पूर्ण प्रतिज्ञायें हेतु शून्य होने के कारण निर्मूल ही हैं और प्रतिज्ञा करने वाले को प्रतिज्ञा हानि निग्रहस्थान में लाकर परास्त करवा देती हैं। इसी प्रकार से आपकी प्रतिज्ञा भी हेतु शून्य है। जब तक कि आप अपनी प्रतिज्ञा को साबित करने के लिये हेतु रूप में कोई प्रमाण पेश न करें। अतः आपका दावा बिना दलील के यक तरफ़ा ही खारिज करने के काबिल है। चूंकि इस प्रकार का प्रश्नोत्तर अविद्या जन्य 'सिद्धान्त विरुद्ध' रिाष्टाचार धर्म तथा नीति के भी विरुद्ध था। और अविद्या जन्य कार्य "अन्धतमः प्रविशन्ति येऽविद्या मुपासते।" यजु० ४०।१२

इस मन्त्र की आज्ञानुसार पाप तथा नरक प्राप्ति का हेतु है।

अतः इस प्रकार के प्रश्नोत्तर से जनता रोष में आगई और रोष में आकर जनता ने अपने भाषणों प्रस्तावों तथा लेखों द्वारा प्रश्नोत्तर कर्ता पाखण्डी पोप की खूब हजामत बनाई। जैसा कि इस तसवीर का दृश्य प्रत्यक्ष प्रमाण है।

चूंकि लोक में अपमान करने नाम ही जूता मारना लिया जाता है। जैसा कि उपर्युक्त पुस्तक के कर्ता ने भी समाजियों की ओर से "मियानी में शिवलिंग के अपमान" तथा मथुरा में कृष्ण के मुकुट को हाकी के डण्डों से ठुकराना आदि व्यवहार को 'तड़ातड़'

जूते मारने का पर्य्यायवाची ही माना है । अतः इस पुस्तक में जहां कहीं भी किसी की तरफ से किसी के सिर पर जूते का प्रतिपादन किया जावेगा । उसका अभिप्राय यही होगा कि अमुक ने अमुक का घोर अपमान किया ।

उदाहरणार्थ सृष्टि के आरम्भ में विष्णु तथा महादेव का "कौन पिता है कौन पुत्र है" इस पर विवाद करते हुवे परस्पर तड़ातड़ जूतपेजार हुवा (शिव० देवेश्वर०) महादेव की पत्नी सती तथा पार्वती को देख कर जब ब्रह्मा का वीर्यपात होगया तब महादेव ने तड़ातड़ जूतों से ब्रह्मा की पूजा की (शि० रुद्र० सती० पार्वती) राम तथा परशुराम जी का परस्पर तड़ातड़ जूतम पेजार हुवा (बाल्मी कि० बाल) गणेश तथा महादेव का परस्पर तड़ातड़ जूतम पेजार हुवा । (शि० रुद्र० कुमार०) इत्यादि अनेक स्थानों में पौराणिक देवताओं का परस्पर तड़ातड़ जूतम पेजार पुराणों में भरा पड़ा है किसी को देखने का शौक हो तो वह पुराणों को खोल कर देख ले हमारे विचार में तो इस प्रकार के व्यवहार को नीति धर्म तथा शिष्टाचार के सिर पर अनीति अधर्म तथा अशिष्ट व्यवहार का जूता ही कहना मुनासिब है ।

———

पाखण्डी पोप के सिर पर पब्लिक रोष का जूता

"स्वामी जी के वेद में बकरे का दूध" { दयानन्द भाव चित्रावली टाइटिल पेज }

के उत्तर में

"पौराणिक गर्भाधान"

पौराणिकदम्भ—"दयानन्द भाव चित्रावली" के टाइटिल पेज पर एक तसवीर दी गई है जिसमें यह दिखाया गया है कि "स्वामी दयानन्द जी महाराज बकरे के अण्डकोष पकड़ कर उसका दूध निकाल रहे हैं"। प्रमाण में दिया है कि "वे आज बकरा आदि पशुओं के बीच से लेने योग्य पदार्थ का चिकना भाग अर्थात् घी दूध आदि उद्धार किया हुआ लेवें"

(दयानन्द यजुर्वेद भाष्य २१। ४३)

वैदिक बम्ब—यजुर्वेद के मन्त्र में पाठ आता है कि

"छागस्य हविष आत्तामद्य मध्यतो मेद उद्भृतम्"

चूंकि स्वामी दयानन्द जी यह जानते थे कि कहीं पर स्त्री नाम से नर का भी ग्रहण होता है जैसे "चीलें उड़ रही हैं"

"चिड़ियां चहचहाती हैं" और कहीं पर नर के नाम से स्त्री का भी ग्रहण हो जाता है जैसे "तोते उड़ रहे हैं" "यह मोर का अण्डा है" "पण्डित जी के लड़का पैदा हुआ है" अतः स्वामी जी ने "छाग" शब्द को भी ऐसा ही समझ कर जैसे "हिन्दू का दूध" "मुसलमान का दूध" से अभिप्राय "हिन्दू की गाय का दूध मुसलमान की गाय का दूध" होता है न कि हिन्दू या मुसलमान मर्द का दूध। ऐसे ही स्वामी जी ने "छाग" अर्थात् बकरे का दूध अर्थ करके भावार्थ में "छेरी" अर्थात् बकरी का दूध स्पष्ट कर दिया है। इस बात को पौराणिक भाष्यकार महीधर ने नहीं समझा अतः उसने वेद के विरुद्ध अर्थ कर दिया कि

"छागस्य हविषः छाग सम्बन्धि हविः आत्ताम अभक्षयताम्। किञ्च अद्य अस्मिन् दिने मध्यतः उदरमध्यादुद्धृतमुद्धृतंमेदोवपारूपं चात्ताम्"।

"बकरे के पेट में से निकाली हुई चरबी को आज खाओ" पौराणिकों को स्वामी दयानन्द जी का कृतज्ञ होना चाहिये था कि उन्होंने बकरे की चरबी के स्थान में उनको घी तथा दूध खाने पीने का उपदेश वेद से बताया। किन्तु ये पाखण्डी पौराणिक पोप ऐसे कृतघ्न निकले कि स्वामी जी के अर्थों का ही मखौल उड़ाकर नर बकरे का दूध स्वामी जी का भावार्थ प्रगट करने लगे। किन्तु स्वामी जी के अर्थ को झुटलाया नहीं जा सकता। देखिये

द्विभागं छाग दुग्धेन तैल प्रस्थं तुसाधितम्। (गरुड़० आचार० १७७। ३७)

भावितं ऋक्षदुग्धेन मत्स्यस्य रोहितस्यच । (गरुड़० आचार०-१७७ ८०)

दो भाग छाग के दूध से एक प्रस्थ तेल सिद्ध करे । रीछ के दूध से तथा रोहित मछली से उसको भावना दे ।

कहिये महाराज यहां बकरे तथा रीछ के दूध का क्या अर्थ करियेगा ।

इसके अतिरिक्त यह निश्चित सचाई है कि बाज़ बकरों के दूध होता भी है और हमने एक सर्कस में एक बकरे का दूध निकालते स्वयं देखा है ।

अतः स्वामा जी का अर्थ तो हर प्रकार से ठीक है हां असम्भव बातें तो आपके ग्रन्थों में भरी पड़ी हैं । जैसे कि (१) आदमी के पेट से बच्चे की पैदाइश । (२) स्त्री के कान में वीर्याधान । (३) घोड़ी के नाक तथा मुख में गर्भाधान (४) कृष्ण का अर्जुन में गर्भाधान (५) मछली में गर्भाधान (६) तोती में गर्भाधान (७) हरिणी में गर्भाधान इत्यादि इत्यादि अनेक वेद विरुद्ध सृष्टि नियम के विपरीत असम्भव घटनायें पौराणिक साहित्य में भरी पड़ी हैं । अतः स्वामी दयानन्द जी के वेद भाष्य में लिखे बकरे के दूध की चिन्ता को छोड़ कर पहिले पौराणिक गर्भाधान पर विचार कर लें और अगले पृष्ठों में पूरे २ प्रमाण तथा साक्षात चित्रों के दर्शन करके लुत्फ़ उठावें और उनके बच्चों के लिए दूध की चिन्ता करें ।

पुरुष से पुत्रोत्पत्ति

(नं० १)

मान्धातारं यौथनाश्वं मृतं शुश्रुम सृञ्जय ।
यं देवा मरुतो गर्भं पितुः पार्श्वादपाहरन् ॥८१॥
समृद्धो युवनाश्वस्य जठरे यो महात्मनः ।
पृषदाज्योद्भवः श्रीमांस्त्रिलोक विजयी नपः ॥८२॥

(महा० शान्ति० अ० २९)

अर्थ—हे सृञ्जय ! हम सुनते हैं कि युवनाश्व का पुत्र मान्धाता भी मर गया। जिस वायु के गर्भ को देवताओं ने पिता के पसवाड़े में से निकाला था ॥८१॥ जो महात्मा युवनाश्व के पेट में पला था। जो पृषदाज्य से पैदा हुआ और तीनों लोकों का जीतने वाला श्रीमान् राजा था ॥ ८२ ॥

कर्णाधान

(नं० २)

तै गौतम सुतायां तद्वीर्यं शम्भोर्महर्षिभिः ।
कर्णद्वारा तथांजन्यां राम कार्यार्थमाहितम् ॥ ६ ॥
ततश्च समये तस्माद्धनुमानिति नाम भाक् ।
शंभुर्जज्ञे कपितनुर्महाबल पराक्रमः ॥ ७ ॥

(शिव० शतरुद्र० अ० २०)

अर्थ—उन महर्षियों ने वह शिवजी का वीर्य गौतम की पुत्री अंजनी में कान के द्वारा राम के काम के लिये प्रविष्ट किया ॥६॥ उसके पश्चात् समय पर उस वीर्य से महाबली तथा पराक्रम युक्त वानर के शरीर वाले हनुमान नामक शिवजी पैदा हुये ॥ ७॥

नासिका मुखाधान

(नं ३)

ददर्शयोगमास्थाय स्वां भार्यां बडवां तथा ॥५४॥
अश्वरूपेणमार्तण्डस्तां मुखेन समासदत् ।
मैथुनायविचेष्टन्तीं परपुंसो विशंकया ॥ ५५ ॥
सातां विवस्वतं शुक्रं नासाभ्यां समधारयत् ।
देवौ तस्यांमजायेतामश्विनौभिषजांवरौ ॥ ५६ ॥

(भविष्य० ब्रा० अ० ७९)

अर्थ—सूर्य ने योग द्वारा अपनी स्त्री को घोड़ी बनी हुई देखा ॥ ५४ ॥ तब सूर्य घोड़े को भांति पर पुरुष की शंका से चेष्टा करती हुई संज्ञा को मुख द्वारा मैथुनार्थ प्राप्त हुआ ॥ ५५ ॥ उस संज्ञा ने सूर्य के वीर्य को नासिका से धारण किया। उसमें से वैद्य-वर देवता आश्वनीकुमार पैदा हुये ॥ ५६ ॥

कृष्ण का अर्जुन में गर्भाधान

(नं० ४)

समालोक्यार्जुनीयाऽसौ मदनावेशविह्वला ॥१८८॥
ततस्तां च तथा ज्ञात्वा हृषीकेशोऽपि सर्ववित् ।

तस्याः पाणिगृहीत्वैव सर्व क्रीडा बनान्तरे ॥१८६॥
यथा काम रुहो रेमे महा योगेश्वरो विभुः ॥१९०॥
(पद्म० पाताल० अ० ७४)

अर्थ—उस काम से व्याकुल अर्जुनी को देख कर ॥ १८८ ॥ तब उसको इस प्रकार की जान कर सर्वज्ञ कृष्ण जी भी उस के हाथ को पकड़ कर ही सब क्रीडा के योग्य बन में ॥१८६॥ लेजा-कर कामदेव के समान उस अर्जुनी से रमण करने लगे ॥१९०॥

मत्स्याधान

(नं० ५)

श्येनपाद परिभ्रष्टं तद्वीर्यमथ वासवम् ।
जग्राह तरसोत्पेत्य साद्रिकामत्स्यरूपिणी ॥५६॥
मासे च दशमे प्राप्ते तदा भरत सत्तम ।
कदाचिदपि मत्स्यीं तां बबन्धुर्मत्स्यजीविनः ॥५७॥
उज्जहुरुदरात्तस्याः स्त्रीं पुमांसश्च मानुषम् ।
आश्चर्य्यभूतं तद्दृत्वा राज्ञोऽथ प्रत्यवेदयन् ॥५८॥
(महा० आदि० अ० ६३)

अर्थ—उसके पश्चात वह बाज के पैर से गिरा हुआ राजा वसु का वीर्य मछली का रूप धारण करने वाली अद्रिका ने ग्रहण कर लिया ॥ ५६ ॥ हे भरतों में श्रेष्ठ ! तब दस महीने व्यतीत होने पर कभी उस मछली को मच्छीहारों ने पकड़ लिया ॥ ५७ ॥ उन मच्छीहारों ने उस मछली के पेट से एक स्त्री और एक पुरुष

विचित्र नियोग शाला

निकाला । तब उन्होंने इस आश्चर्यभूत बात की खबर राजा से की ॥ ५८ ॥

शुक्याधान

(नं० ६)

शुक्याः शुकः कणादाख्यस्तथोलूक्याः सुतोऽभवत् ॥२२॥
मृगीजोंऽथष्य शृंगोऽपि वशिष्ठो गणिकात्मजः ॥२३॥
माण्डव्यो मुनिराजस्तु मण्डूकी गर्भ संभवः ॥२४॥

(भविष्य० ब्रा० अ० ४२)

अर्थ—शुकी से शुकदेव पैदा हुआ । कणादमुनि उलूकी का पुत्र था ॥ २२ ॥ ऋष्यशृङ्ग हिरणी से पैदा हुआ और वशिष्ठ वेश्या से पैदा हुआ ॥ २३ ॥ मुनिराज माण्डव्य मेंडकी के गर्भ से पैदा हुआ ॥ २४ ॥

मृग्याधान

(नं० ७)

अहं हि किन्दमो नाम तपसा भावितो मुनिः
व्यपत्रपन् मनुष्याणां मृग्यां मैथुनमाचरम् ॥२८॥

अर्थ—मैं तो तप से प्रतिष्ठित मुनि किन्दम नाम वाला मनुष्यों से शरमिन्दा होकर हिरणी में मैथुन कर रहा हूँ ॥ २८ ॥

मनुष्य का मनुष्य में तथा मनुष्य का पशु पक्षी आदि में गर्भाधान करना "रेतो मूत्रं बिजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम्" । यजु० १९ । ७६ इत्यादि वेद के विरुद्ध होने से उपर्युक्त लेख "ऋषियों के आचार पर बदकुदार का जूता" ही कहा जा सकता है ।

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 2861
दयानन्द महिला महा... कुरुक्षेत्र

कुल मर्यादा (भाव चित्रवली चित्र नं० २)

का उत्तर

पौराणिक नाचघर

पौराणिक दम्भ—दयानन्द भावचित्रावली में स्वामी दयानन्द के पैर में घुंगरू बांध कर उनको नाचता हुवा दिखाया गया है और पं० लेखराम जी तथा महात्मा मुन्शीराम जी को स्वामी जी के साथ तबले और सारंगी बजाते हुवे दिखाया गया है। और प्रमाण दिया है कि स्वामी जी ने अपने यजुर्वेद भाष्य अ० ३० मन्त्र २० के पदार्थ तथा भावार्थ में गाने तथा नाचने की शिक्षा दी है। और यह भी लिख दिया है कि स्वामी जी चूंकि कापड़ी खानदान में पैदा हुए थे। अतः उनका खानदानी पेशा नाचना गाना था। स्वामी जी ने नाचने की शिक्षा देकर कुल मर्यादा का पालन किया है।

असली संगीत नयानन्द—जिस [दयानन्द] की मां का पता न बाप का। [पृ० १० पं० ७]

स्वामी जी अपने बाप की व्याहता औरत से पैदा हुवे या उस दाशता कापडी औरत से। [पृ० १९ पं० ११]

राम पूजा और शैतान की तालीम—स्वामी जी यकीनी तौर हरिभजन कापडो को औरत के पेट से पैदा हुवे जो बराय नियोग अम्बा शंकर के पास आई हुई थी। [पृ० ४९ पं० २]

हमें ताजा ऋषि की मां के मुतअल्लक़ तो दरयाफ्त कर लेना चाहिये। [पृ० ९३ पं० ९]

था ब्रह्मचारी दयानन्द या कि कंजर देखिये। [पृ० ९९ पं० ३]

वैदिक बम्ब—स्वामी दयानन्द जी सन्यासी थे सन्यासी का माता पिता गुरु ही होता है। उसे पिछला परिचय देने की आवश्यकता नहीं होती। अतः स्वामी जी ने अपने जन्म सम्बन्धी माता पिता तथा निवास स्थान का पता नहीं दिया। हां आर्य-समाज ने अन्वेशन करके टंकारा शताब्दी पर स्वामी जी के निवास स्थान कुल परिवार आदि का निश्चय करके घोषणा करदी कि—

[१] टंकारा ही स्वामी जी का जन्म स्थान था।

[२] स्वामी जी के पिता कर्सन जी लालजी त्रिवेदी औदिच्य ब्राह्मण थे।

[३] कर्सन जो जमीदार थे।

[४] शराफ थे।

[५] जमींदार थे।

[६] कट्टर शैव थे।

[७] ऋषि दयानन्द का मूल नाम मूलशंकर दयाल जी था।

(दयानन्द जन्म स्थान निर्णय)

स्वामीजी की माता के नाम का पता नहीं लग सका कारण यह है

कि भारत में शिजरा नसब बाप के नाम से प्रसिद्ध होता है मां के नाम से नहीं। स्कूलों अदालतों आदि में पिता का नाम ही दर्ज किया जाता है माता का नहीं। अतः हमारे में से भी प्रत्येक आदमी अपनी पड़दादी का नाम नहीं बता सकता। विश्वामित्र की माता का नाम नहीं लिखा। इसी प्रकार से ऋष्यश्रृंग, अगस्त्य कणाद, गौतम, द्रोणाचार्य आदि अनेक ऋषियों को माता का नाम इतिहास में नहीं लिखा। इससे उन पर क्या आक्षेप हो सकता है। और फिर आर्य-समाज तो गुण कर्म स्वभाव से वर्ण व्यवस्था को मानता है। ऋषि दयानन्द जी गुण कर्म स्वभाव से ब्राह्मण तथा सन्यासी थे। यद्यपि स्वामी जी जन्म से औदीच्य ब्राह्मण थे क्यूं कि एक पौराणिक सन्यासी पूर्णानन्द जी ने उनको सन्यास देकर सरस्वती की उपाधि दी जोकि पौराणिक पृथा के अनुसार उच्च-कुल के ब्राह्मण को दी जा सकती है। जन्म से कापडी को नही तथापि उनका जन्म किसी के भी घर का हो इससे आर्य-समाज के सिद्धान्त की कोई हानि नहीं है। यद्यपि उनके खानदान का पेशा जमींदारी शराफी आदि था। किन्तु यदि नाचना गाना भी मान लिया जावे तो हमारे सिद्धान्त की क्या हानि, जब वशिष्ठ जी रंडी के पुत्र होकर भी ब्रह्मर्षि हो सकते हैं। तो जन्म के कारण ऋषि दयानन्द के ऋषि होने पर क्या शंका। यदि इस बात को ठीक भी मान लिया जावे कि स्वामी दयानन्द की पैदाइश नियोग से थी। तो इससे सनातन धर्म में नियोग का रिवाज सिद्ध होकर हमारे सिद्धान्त की पुष्टि होती है। यदि व्यासादि के नियोग करने

से धर्म पुत्र युधिष्ठिर और महात्मा विदुर पैदा हो सकते हैं। तो दयानन्द के ऋषि होने पर नियोग के कारण क्या शंका। अब रह गया केवल नाचने की शिक्षा देने का प्रश्न सो स्वामी दयानन्द जी की दृष्टि में नृत्य क्या वस्तु है। यह उनके ही शब्दों में देखने की कृपा करें—

गन्धर्व वेद कि जिसको गान विद्या कहते हैं। उसमें स्वर, राग, रागिणी, समय, ताल, ग्राम, तान, वादित्र, नृत्य, गीत आदि को यथावत सीखें। परन्तु मुख्य करके सामवेद का गान वादित्रवादन पूर्वक सीखें।और नारद संहितादि जो २ आर्ष ग्रन्थ हैं उनको पढें। परन्तु भडुवे वेश्या और विषयासक्ति कारक वैरागियों के गर्दभशब्दवत् व्यर्थ अलाप कभी न करें [सत्यार्थ० समु० ३ पठन पाठन] इससे साबित है कि ऋषि दयानन्द जी नारद संहिता के अनुसार सामवेद को गाते हुवे अंग चेष्टा का नाम जो नृत्य है उसे विद्यार्थियों को सिखाने की शिक्षा देना उचित मानते थे। इसी लिये दयानन्द जी ने मनु का प्रमाण देकर इसी समुल्लास में विद्यार्थियों के लिये व्यर्थ नाच गान का निषेध किया है सारांश यह कि ऋषि दयानन्द नारद संहितानुसार साम गान नृत्य को सिखाना उचित था। वेश्या भांडादिवत नाच गान सिखाने को अनुचित मानते थे। ऐसे साम गान पूर्वक नृत्य करने वाले के लिये वेद में प्रार्थना भी है कि—

नृतायानन्दाय तलवम् ॥ यजु० ३०।२० ॥

हे परमेश्वर वा राजन् ! आप नाचने के लिये और आनन्द के अर्थ ताली आदि बजाने वाले को उत्पन्न वा प्रसिद्ध कीजिये।

भावार्थ मनुष्यों को चाहिये कि हँसी और व्यभिचार आदि दोषों को छोड़ और गाने बजाने आदि की शिक्षा को प्राप्त होके आनन्दित होवें। [दयामन्द भाष्य] इस रहस्य को महीधर ने न समझते हुवे लिखा कि—

(नृताय आलभते आनन्दाय तलवम् ।)

"नाचने वाले आनन्ददेवता के लिये ताली बजाने वाले का वध करें।"

किन्तु ऋषि दयानन्द जी काअर्थ वेदानुकूल तथा युक्ति युक्त है इसी साम गान पूर्वक नृत्य को सिखानेकी पुराणों में आज्ञा है कि—

सिद्धान्त

प्रातरुत्थाय: शिष्यानध्यापयतियत्नत: ।
वेद शास्त्रंनृत्यगीतं कस्तेन सदृश: कृति: ॥१६

[भविष्य० उत्तर० अ० १७४]

अर्थ—जो गुरु प्रात:काल उठ कर अपने शिष्यों को वेद शास्त्र नृत्य गीत सिखाता है। उस जैसा कृत कृत्य कौन है इसी साम गान पूर्वक नृत्य को महादेव जी भी करते थे जैसे—

महादेव का नृत्य—तत: सुनटरूपोऽसौ मेनकाया गणेमुदा ।
चक्रे सुनृत्यं विविधं गानं चाति मनोहरम् ॥२८

[शिव० रुद्र० पार्वती० अ० ३०]

महादेव जी ने सुन्दर नट का रूप धारण करके प्रसन्नता पूर्वक मेनका के आंगन में अनेक प्रकार का सुन्दर नाच तथा मनोहर गाना गाया।

इसी सामगान पूर्वक नृत्य को राम भी करते थे जैसे—

राम का नृत्य—इति स्तुत्वा शिवं तत्रमन्त्रध्यान परायणः।
पुनः पूजां ततः कृत्वा स्वाम्यग्रेसननर्तह ॥२१॥

रामने शिव की स्तुति करके मन्त्र द्वारा ध्यान लगा कर फिर पूजा करके अपने स्वामी शिव के आगे नाच किया।

इसी सामवेद पूर्वक नाच तथा गान का अभ्यास करके देवयानी तथा कच परस्पर एक दूसरे को प्रसन्न किया करते थे।

[महा० आदि० अ० ७६।२४।२६]

इसी सामवेद पूर्वक नाच तथा गान को अर्जुन स्वर्ग में सीखा तथा विराट के महल में सिखाया।

[महा० विराट० अ० २।२९]

इसी सामवेद पूर्वक नाचने तथा गाने को कृष्ण जी महाराज गोपियों सहित सेवन करते थे। जिसके लिये "न नौ मन तेल हो न राधा नाचे" वाली लोकोक्ति भी प्रसिद्ध है।

तो क्या आप गन्धर्वेद के कर्ता नारद, व्यास, कच, देवयानी, अर्जुन, महादेव, राम, तथा कृष्ण आदि सम्पूर्ण सामवेद पूर्वक नृत्य गान करने वालों को ऋषि दयानन्द की भांति कंजर की पदवी देकर उनकी इस प्रकार तसवीरें बनाना उचित समझते हैं कि

जैसे आपने ऋषि दयानन्द की तथा हमने महादेव आदि की बनाई हैं।

चूंकि नारद संहिता के अनुसार साम गान पूर्वक नृत्य के अतिरिक्त वेश्या भड़ुओं की भांति कामोत्तेजक नाच का नाचना यजु० ३०।२० के विरुद्ध होने से पाप है अतः ऋषियों पर इस कलंक का लगाना "ऋषियों की शान पर बेईमान का जूता" ही कहना उचित है।

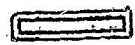

पौराकिक नाचघर अर्थात ऋषियों की शान पर बेईमानी का जूता।

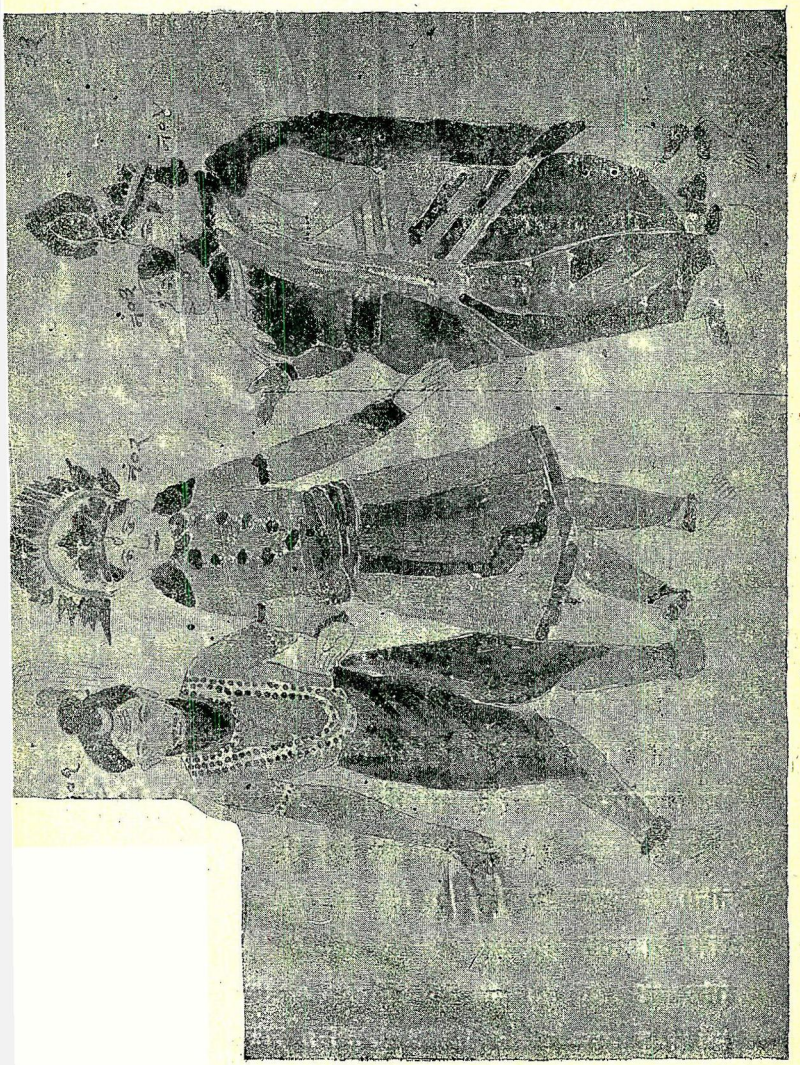

नवीन वैदिक मत की एक नई क्रिया (दयानन्द भाव चित्रावली चित्र नं० ४)

के उत्तर में

पौराणिक पुरुष मैथुन

पौराणिकदम —दयानन्द भाव चित्रावली में स्वामी जी को गुदा से सांप पकड़ते हुये दिखाया गया है और प्रमाण दिया है कि स्वामी जी ने यजुर्वेद भाष्य २५ । ७ में गुदा से अंधे सांपों को पकड़ने की आज्ञा दी है।

वैदिकबम्ब—आदमी के पेट में खराबी हो जाने से तीन प्रकार के कीड़े पैदा हो जाते हैं। एक चमूने होते हैं जो चावल जितने बड़े होते हैं। जो बच्चों तथा दूसरे मनुष्यों के भी गुदा में काटकर तकलीफ देते हैं। दूसरे कद्दाने होते हैं जो अनुमान एक इंच के करीब लम्बे होते हैं। कई बार पाखाने फिरने पर इनकी ढेरी लग जाती है। तीसरे महल्लप होते हैं जो गज भर के करीब लम्बे होते हैं। इन तीनों प्रकार के कीड़ों के आंखें नहीं होतीं। अतः इनको अंधे सांप के नाम से भी याद किया जाता है। ये आदमी को अंदर से खाकर मौत के घाट उतार देते हैं। अतः इनका

औषध द्वारा गुदा में से खारिज करना अति आवश्यक है। इ ो क। 'शत्ता वद म हं। जैस कि—

अन्धाहीनूत्स्थूलगदया सर्पान् गुदाभिर्विहरुत आन्त्रैः इत्यादि (यजु० २५। ७)

हे मनुष्यो ! तुम स्थूल गुदेन्द्रिय के साथ वर्तमान अंधे सांपों को गुदेन्द्रियों के साथ वर्तमान विशेष कुटिल सांपों को आंतों से निरन्तर लेओ (दयानन्द भाष्य)
कैसा स्पष्ट भाष्य है कि जिससे साफ़ पता लगता है कि वेद स्थूल गुदा इन्द्रिय साधारण गुदा इन्द्रिय तथा आंतों के अन्दर रहने वाले अंधे सांपों अर्थात् कीड़ों को लेने अर्थात खारिज करने की आज्ञा देता है। किन्तु इस अभिप्राय को महीधर ने न समझ कर लिखा कि—

गुदस्य स्थूल भागेन अन्धाहीन् प्रीणामि
स्थूल गुदातिरिक्तै गुदाभागैः सर्पान् प्रीणामि
मूत्र पुटं तेनापो देवताः प्रीणामि
अण्डः ताभ्यां वृषणं देवं प्रीणामि
लिंगं तेन वाजिनं देवं प्रीणामि
रेतो वीर्यं तेन प्रजां प्रीणामि
विष्टायाः पिण्डैःकूश्मान् देवान् प्रीणामि

(महीधर भाष्य)

मैं स्थूल गुदा इन्द्री के भाग से अंधे सांपों को ,साधारण गुदा के भाग से सांपों को, मूत्र से आप देवता को, अण्ड कोषों से वृषण देवता को, लिंग से वाजी देवता को, वीर्य से प्रजा तथा पाखाने के पिण्डों से कूष्मान देवता को प्रसन्न करता हूँ।

यह महीधर का अर्थ कितना गंदा और असंगत है। हमें इस पर टीका टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं। किन्तु पौराणिक पाखंडी ने अपने गंदे भाष्य की तरफ दृष्टि न डालते हुये ऋषि दयानन्द के भाष्य का मखौल उड़ाने की कमीना कोशिश की है। और "गुदा से अंधे सांपों को लेओ" का अर्थ "गुदा में से अन्धे सांपों को लेओ अर्थात् खारिज करो" न करके "गुदा से (चिमटे की भांति) सांपों को पकड़ो" अर्थ कर डाला। इस पाखण्डी को इतनी अक़्ल न आई कि अंधे सांप तो आंतों और गुदा के साथ अंदर मौजूद हैं। उनको बाहर से कहां से पकड़ा जावेगा। सारांश यह कि पोप जी ने "गुदा में से निकालने की चीज़ को" "गुदा में दाखिल करने की चीज़" ज़ाहिर किया है। क्यों न हो पाखण्डी पौराणिकों को गुदा में दाखिल करने कराने का अभ्यास जो हुआ। जैसे—

(१) राक्षसों ने ब्रह्मा की गुदा···में दाखिल करने की कोशिश की (भागवत० स्कं० ३ अ० २०। २३–२६)

(२) राजा तालध्वज ने नारद को गुदा में दाखिल करके ५० पुत्र पैदा कर लिये। (भविष्य० उत्त० अ० ४७)

(३) कृष्ण ने अर्जुन को गुदा में दाखिल करके आनन्द प्राप्त किया (चित्र नं० ३ में तसवीर नं० ४)

(४) महीधर भाष्य में देवताओं को प्रसन्न करना। इत्यादि उदाहरण बतलाते हैं कि पौराणिकों के यहां गुदा में दाखिल करने कराने का रिवाज मौजूद है। अतः वे लोग अपने कुकर्म को वेद के सिर मढ़ कर उसे कलङ्कित करना चाहते हैं। जो कि व्यर्थ तथा कमीना चेष्टा ही है। अब जरा साहित्य की तरफ से पौराणिक क्या खूब खिताब दिया है। देखिये—

पौराणिकातांव्यभिचार दोषो न शंकनी कृतिभिः कदाचित।
पुराण कर्ता पुत्रोव्यभिचार जातः॥

(सभाषित रत्न०)

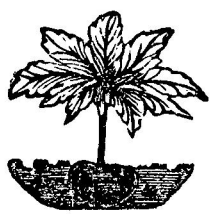

स्वामी दयानन्द हिन्दू नहीं थे

(दयानन्द भाव चित्रावली चित्र नं० ५)

के उत्तर में

पौराणिक भोजनशाला

पौराणिक दम्भ—दयानन्द भाव चित्रावली में ऋषि दयानन्द जी को गौ मारने की आज्ञा देने वाला ज़ाहिर किया गया है और स्वामी जी के इशारे से गौऐं काटी जा रही हैं। ऐसी तसवीर बनाई है और प्रमाण में सत्यार्थ प्रकाश सन् १८७५ का प्रथम एडीशन तथा स्वामी जी का यजुर्वेद भाष्य १३। ४६ पेश किया गया है।

वैदिक बम्ब—यह ठीक है कि स्वामी दयानन्द हिन्दू न थे अपितु आर्य थे क्यों कि हिन्दू शब्द संस्कृत का नहीं है अतः संस्कृत की किसी प्राचीन पुस्तक वेद, उपनिषद ब्राह्मण कोष आदि में हिन्दू शब्द नहीं आता। हिन्दू शब्द फ़ारसी का है। जिसक अर्थ गुलाम और काफ़िर फ़ारसी के कोषों में लिखे हैं। स्वामी

दयानन्द क्या हमारे तुम्हारे में से कोई भी हिन्दू नहीं है अपितु हम सब आर्य हैं। हां यदि आपका यह अभिप्राय हो कि हिन्दू नाम गोरक्षक का है और स्वामी जी ने गौबध की आज्ञा दी हैं। अतः स्वामी जी हिन्दू न थे तो आपका विचार गलत है। क्योंकि स्वामी जी अत्यन्त वेद भक्त और गौ रक्षक थे।

(१) प्रथम सत्यार्थ प्रकाश का मसौदा स्वामी जी ने सन् १८७५ म प्रयाग में मु० जयकृष्ण दास जी को लिखवाया और स्वयं यात्रा में चले गये। प्रथम सत्यार्थ प्रकाश न स्वामी जी की निगरानी में छपा न स्वामी जी ने प्रूफ देखे और न उसकी विषय सूची स्वामी जी ने बनाई। अतः ऐसी सूरत में पापी पाखण्डी पौराणिकों का दाव चल गया और उन्होंने वेद भाष्य गृह्य सूत्र महा भारत तथा पुराणादि की भांति सत्यार्थ प्रकाश में भी गोबध तथा गो मांस भक्षण की आज्ञा डाल दी। जब स्वामी जी को इसका पता लगा तो स्वामी जी ने तुरन्त जितने सत्यार्थ प्रकाश मिले सब भस्म कर दिये और उसी समय इस सत्यार्थ प्रकाश के गलत होने का नोटिस निकाल दिया जो दयानन्द ग्रन्थमाला के प्रथम भाग के आरम्भ में छापा हुआ है। और फिर से शुद्ध करके सत्यार्थ प्रकाश छपवाया और द्वितीयावृत्ति की भूमिका में भी प्रथमावृत्ति के गलत होने तथा उसे शुद्ध करने का लेख लिख दिया। अतः प्रथमावृत्ति सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज के लिये अप्रमाणिक त्याज्य तथा काबिल सोख़तनी है। उसका हमारे लिये प्रमाण देना पबलिक को धोखा देना है।

(२) यजुर्वेद का जो आपने प्रमाण दिया है वह अधूरा दिया है। पूरा प्रमाण इस प्रकार से है कि—

"हे राज पुरुषो ! तुम लोगों को चाहिये कि जिन बैल आदि पशुओं के प्रभाव से खेती आदि काम जिन गौ आदि से दूध घी आदि उत्तम पदार्थ होते हैं कि जिन के दूध आदि से सब प्रजा की रक्षा होती है उनको कभी मत मारो और जो जन इन उपकारक पशुओं को मारें उनको राजादि न्यायाधीश अत्यन्त दण्ड देवें और जो जंगल में रहने वाले नील गाय आदि प्रजा की हानि करें वे मारने योग्य हैं। (यजुर्वेद १३ । ४६ दयानन्द भाष्य)

यहां पर नील गाय के अर्थ रोझ तथा मा ने के अर्थ भी दण्ड देना है। हानिकारक तो गाय आदि पशु क्या मनुष्य भी मारने योग्य हैं। हां पाप तो अनपराधी के मारने का है वेद की आज्ञा है कि—

मागामनागामदितिं वधिष्ट ॥ ऋग० ८ । १०१ । १५ ॥
यदिनोगांहिंसि ..... तंत्वासीसेन विध्यामो ॥ अथर्व० १ । १६ । ३ ॥

अखण्डित निर्दोष गौ को नहीं मारना चाहिये। यदि कोई हमारी गौ को मारे तो उसे गोली से उड़ा देना चाहिये। अतः गौ का मारना वेद के विरुद्ध होने से महा पाप है। और यही स्वामी दयानन्द जी तथा आर्य-समाज का सिद्धान्त है। हां पौराणिक साहित्य में गौ के मारने तथा उसके मांस खाने की खुली आज्ञा मौजूद है।

(१) गर्भवती गौ को मार कर उससे हवन करना चाहिये। (महीधर भाष्य यजु० ३५। २०)

(२) गौ की चरबी से पितरों के निमित्त हवन करना चाहिये। (महीधर भाष्य यजु० ८। ३०)

(३) गौ का मांस श्राद्ध में ब्राह्मण को खिलाने से पितरों की एक वर्ष तृप्ति होती है। (महा० अनु० अ० ८८। ८)

(४) पांच करोड़ गौओं का मांस पूड़े और पापड़ राजा चैत्र ने यज्ञ में ब्राह्मणों को खिलाये। (ब्रह्मवै० प्रकृति० अ० ६१।६८।९९)

(५) राजा मनु ने पांच लाख गौओं का मांस घी में पका कर ब्राह्मणों को खिलाया। (ब्रह्मवै० प्रकृति० अ० ५४। ४८। ४६)

(६) विश्वामित्र के पुत्रों ने गर्ग मुनि की गौ पितरों के निमित्त मार कर खाई। उसका उनको पुण्य हुआ। (शिव० उमा० अ० ४१)

(७) राजा रन्ति देव के रसोई खाने में सहस्रों गौ मारी जाती थीं (महा० शान्ति० अ० २६। १२७)

(८) गौ को मार कर उसकी चरबी तथा मांसादि मुर्दे के साथ जलाने से मरने वाला स्वर्ग में जाता है। (आश्वलायन० ४।३।१६)

कहां तक लिखा जावे रुक्मणी के बिवाह में भी गौ मार कर उसके मांस पकाने का प्रस्ताव किया गया और उसका किसी ने भी विरोध नहीं किया। असली पुराण का लेख तथा तदनुकूल तसवीर देखने की कृपा करें।

रुक्मणी के बिवाहार्थ

भोजन प्रस्ताव

गवां लक्षं छेदनं च हरिणानां द्विलक्षकम्।
चतुर्लक्षं शशानां च कूर्माणां च तथा कुरु॥ ६१॥

दशलक्षं छागलानां भेटानां तच्चतुर्गुणम् ।
पर्वणि ग्राम देव्यै च बलिं देहि च भक्तितः ॥ ६२ ॥
एतेषां पक्वमांसंच भोजनार्थं च कारय ।
परिपूर्णं व्यञ्जनानां सामग्रीं कुरु भूमिप ॥ ६३ ॥
राजा संभृत संभारो बभूव सत्वरं मुदा ।
निमन्त्रणं च सर्वत्र चकार च सुताज्ञया ॥ ६६ ॥
(ब्रह्म वैवर्त पुराण खण्ड ४ अ० १०५)

अर्थ--एक लाख गौओं को काटा जावे और दो लाख हिरणों को काटा जावे। चार लाख खरगोश और चार लाख ही कछवों को काटा जावे। दस लाख बकरों को और चालीस लाख मेंढों को काटा जावे। हे राजन्! पर्व के दिन गावों की देवी को भेंट देकर भक्ति पूर्वक इन सब के मांस को भोजन के लिये तैयार किया जावे। इस प्रकार व्यञ्जनों से परिपूर्ण सामान को तैयार कीजिये। राजा ने पुत्र की आज्ञा के अनुसार शीघ्रता से प्रसन्नता पूर्वक सारा सामान तैयार कर लिया और सर्वत्र सबको निमन्त्रण दे दिया।

चूंकि गौ आदि पशुओं का मारना तथा मांस का खाना "य आमं मासमदन्ति। अथर्व० ८। ६। २३" इत्यादि वेद के विरुद्ध होने से महा पाप है और इस प्रकार के लेख मांसाहारी निर्दयी लोगों ने पुस्तकों में मिला दिये हैं। अतः इस प्रकार के लेखों को "हिन्दू धर्म की आन पर निर्दयी इन्सान का जूता" ही कहना उचित है।

पौराणिक भोजनशाला
अर्थात्
हिन्दु धर्म की आन पर
निर्दयी इन्सान का जूता

स्वामी जी नन्दीगण के पेट में { दयानन्द भाव चित्रावली चित्र नं० ७ }

के उत्तर में

पौराणिक पेटवाड

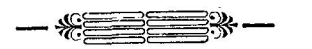

पौराणिक दम्भ—दयानन्द भाव चित्रावली में स्वामी जी को नन्दीगण बैल के पेट में दिखलाया गया है और प्रमाण में स्वामी जी का स्वलिखित जीवन चरित्र दिया गया है और इस घटना को झूठी तथा असंभव बतलाकर मखौल उड़ाया गया है कि स्वामी जी किस रास्ते से बैल में घुसे।

वैदिक बम्ब—यद्यपि आर्य समाज के स्वामी दयानन्द तब से बने जब सब से पहिला आर्य समाज चैत्र शुदी ५ संवत् १९३२ तदनुसार १० अप्रैल सन् १८७५ ईसवी में बम्बई में कायम हुआ और तब से ही आर्यसमाज उनके विषय में अपना उत्तर दायित्व समझता है। इससे पूर्व वे पौराणिक दयानन्द थे तथा पौराणिक ही उनके विषय में उत्तर देने के जिम्मेवार हैं तथापि इतने बड़े

पत्थर के नन्दीगण बैल का होना तथा सके पेट में स्वामी जी का लेट जाना कोई असंभव बात नहीं है। ऐसा थोथा पत्थर का बैल ऊपर से पीठ की तरफ से चौड़ा हो सकता है। और उस तरफ से मनुष्य उसमें घुस सकता है। यदि विश्वास न हो तो आप एसे बैल के लिये हमें आर्डर दें। तथा १०००) नक़द आर्डर के साथ भेजने की कृपा करें। हम आप को ऐसा बैल बनवा देंगे जिसमें आप तथा आपका परिवार भी लेट सकेगा। फिर आपको घुसने के दरवाज़े का भी पता लग जावेगा और आपकी शंका कतई निर्मूल हो जावेगी। स्वामी जी के बयान में ग़लती का शक नहीं हो सकता क्योंकि इस घटना के बयान करने से कोई उनका स्वार्थ सिद्ध नहीं होता हमें तो हैरानी इस बात की है कि पौराणिकों के अंदर भी संभवासंभव का भाव पैदा होने लगा। वरन सनातन धर्म में भी भला कोई घटना असम्भव हो सकती है। जिस सनातन धर्म में एक गौ के शरीर में तेतीस करोड़ देवता घुस कर निवास कर सकते हैं और जिस सनातन धर्म में इन्द्र दिति के योनि द्वार से प्रविष्ट होकर उसका गर्भ खण्डित कर सकता है। जिस सनातन धर्म में शुक्राचार्य्य के पेट में बैठकर कच बातें कर सकता है जिस सनातन धर्म में महादेव जी शुक्राचार्य्य को फल की भांति निगल सकते हैं और शुक्राचार्य्य एकसौ वर्ष तक महादेव के पेट में घूम २ कर लिंग के रास्ते से बाहर आ सकता है। उस सनातन धर्म में स्वामी दयानन्द जी का पत्थर के थोथे विशाल नन्दी बैल में घुस कर लेट जाना कैसे

असम्भव प्रतीत हो सकता है। प्रमाण पूर्वक चित्र देखने की कृपा करें।

(१) इन्द्र दिति के पेट में

अशुचिश्चदितिर्देवी सुष्व प निज मन्दिरे ॥ ११ ॥
अङ्गुष्ठमात्रो भगवान् महेन्द्रो वज्रसंयुतः।
कुक्षिमध्ये समागम्य चक्रे गर्भंससप्तधा ॥ १२ ॥
योनि द्वारेण चागम्य प्रणनाम तदा दितिम् ॥ १४ ॥

(भविष्य० प्रति सर्ग० खं० ४ अ० १७)

भावार्थ—और दिति देवी अशुद्ध अवस्था में अपने मन्दिर में सो गई। ॥ ११ ॥ भगवान इन्द्र अङ्गुष्ठ मात्र शरीर बना कर वज्र साथ लेकर उसकी कूख में चले गये और जाकर उसके गर्भ के सात टुकड़े कर दिये ॥ १२ ॥ और दिति के योनि द्वार से बाहर निकल कर उसको प्रणाम किया ॥ १४ ॥

(२) कच शुक्राचार्य के पेट में

गुरोर्हिभीतो विद्यया चोपहूतः।
शनैर्वाक्यं जठरे व्याजहार ॥ ५१ ॥
तमब्रवीत केनपथोपनीतस्त्वं।
चोदरे तिष्ठसि ब्रूहि विप्र ॥ ५२ ॥
असुरैः सुरायां भवतोऽस्मि दत्तो।
हत्वा दग्ध्वा चूर्णयित्वा च काव्य ॥ ५३ ॥

(महा० आदि० अ० ७६)

भावार्थ—कच गुरु से डरते हुवे विद्या से बुलाने पर पेट में आहिस्ता से बोला ॥ ५१ ॥ शुक्राचार्य बोला कि हे विप्र तू किस रास्ते से मेरे पेट में दाखिल किया हुआ बैठा है बोल ॥ ५२ ॥ कच ने कहा है काव्य असुरों ने मुझ को मार कर जला कर शराब में मिला कर आपको पिला दिया ॥ ५३ ॥

(३) शुक्राचार्य महादेव के पेट में

न किंचिदुक्त्वा सर्वभूत गोप्ता ।
चिक्षेप वक्त्रे फलवत् कवीन्द्रम् ॥ ५३ ॥

(अध्याय ४७)

वर्षाणां शतं कुक्षौ भवस्य परितो भ्रमन् ॥ ३६ ॥
शांभवेनाथ योगेन शुक्र रूपेण भार्गवः ।
इमं मन्त्रं वरं जप्त्वा शंभोर्जठर पंजरात् ॥ ४० ॥
निष्क्रान्तो लिंग मार्गेण प्रणनाम ततः शिवम् ॥ ४१ ॥

(शिव० रुद्र० युद्ध० अ० ४८)

भावार्थ—सब प्राणियों के रक्षक महा देव ने कुछ भी न कह कर शुक्राचार्य को फल की भांति मुख में डाल लिया ॥ ५३ ॥ शुक्राचार्य सौ वर्ष तक महादेव के पेट में चारों तरफ घूमते हुवे ॥ ३६ ॥ महादेव के योग से वीर्य रूप में इस मन्त्र का जप करते

हुये महादेव के पेट रूप पिंजरे से लिंग के रास्ते बाहर आये और फिर शिव को प्रणाम किया ॥ ४०-४१ ॥ अब आप घुसने तथा निकलने के मार्ग की स्वयं तसल्ली करलें।

चूंकि इस प्रकार की घटनायें सृष्टिक्रम के विरुद्ध तथा असम्भव हैं। अतः इस प्रकार के लेखों को "सम्भव ज्ञान के सिर पर भ्रमाज्ञान का जूता" कहना ही उचित है।

हां हमारे पक्ष की पोषक एक और घटना भी सुनिये—

नैलत्थन्ज़ इण्डियन रीडरज़ नं० ३ पृ० नं० ९४ पैरा नं० ४ में लिखा है कि एक काष्ठ का बना हुआ घोड़ा था जिस में फौज के बहुत से आदमी निवास कर रहे थे वे सब ग्रीक पलटन के मनुष्य थे, यहां पर घोड़े की तस्वीर भी दी गई है। और उसमें से सिपाही निकलते हुवे दिखाये गये हैं।

पौराणिक पेट बाड़

अर्थात्

सम्भव ज्ञान के सिर पर

भ्रमाज्ञान का जूता

ऋषि जीवन में भंग [भाव चित्रावली पृ० ८]

के उत्तर में

पौराणिक शराब खाना

———::०::———

पौराणिक दम्भ—दयानन्द भाव चित्रावली में लिखा है कि वह (स्वामी दयानन्द) खुद लिखते हैं कि मैं भंग के नशे में सर्वथा बेहोश हो जाया करता था। यहां पर एक तसवीर दी गई है जिसमें स्वामी जी को हुक्का पीता हुआ दिखाया गया है। और उनके लिये भंग रगड़ी जा रही है।

मुल्क वालों का रुपया धर्म के नाम पर इकट्ठा करके नसवार सूंघने वालों भंग पीने वालों ... ...को मुल्क और कौम के लिये लानत ख्याल करता हूँ।

(राम पूजा और शैतान की तालीम पृ० ५६ पं० १६)

वैदिक बम्ब—आर्य-समाज का सिद्धान्त है कि भक्ष्या-भक्ष्य दो प्रकार का होता है। एक धर्म की दृष्टि से अभक्ष्य, जो किसी सूरत में भी भक्ष्य नहीं हो सकता चाहे प्राण भी चले जावें उदाहरणार्थ मांस भक्षण। दूसरे वैद्यक की दृष्टि से अभक्ष्य जो किसी सूरत में भक्ष्य भी हो जाता है। उदाहरणार्थ शराब से लेकर तम्बाकु तक सारी नशीली वस्तुयें। ये सब वैद्यक की दृष्टि से अभक्ष्य हैं।

इन वस्तुओं का तफरीहतबा के लिये इस्तेमाल करना अभक्ष्य तथा पाप है। किन्तु ये वस्तुएँ यदि किसी बीमारी के इलाज में औषधि के रूप में इस्तेमाल की जावें तो ऐसी सूरत में वे भक्ष्य अर्थात् खाने योग्य हो जाती हैं। जैसा कि महाभारत में लिखा है कि—

प्राणत्यये तथा ज्ञानादाचरन्मदिरामपि।
आदेशितोधर्मपरैः पुनः संस्कारमर्हति ॥२०॥

[महा० शान्ति० अ० ३४]

यदि कोई मनुष्य अज्ञान से या प्राणों की आपत्ति में धर्म के जानने वालों की आज्ञा के अनुसार शराब भी पी लेवें तो उसका पुनः संस्कार हो सकता है।

इस सिद्धान्त के अनुसार ही स्वामी जी ने तम्बाकु का तफरीह तबाके लिये इस्तेमाल नहीं किया अपितु रोग निवृत्ति के लिये। जैसा कि लिखा हुआ है कि—

"महाराज उन दिनों तम्बाकु पीते थे। लाला गोपीचन्द ने जो समाज के सहकारी मन्त्री नियत हुये थे इस पर आक्षेप किया तो महाराज ने उत्तर दिया कि कफ़ बात की निर्वृत्यर्थ पीता हूं। और वहीं तम्बाकु त्याग दिया।"

(महर्षिदयानन्द का जीवन चरित भाग १ पृ० ४५० पं० १६)

रही बात भंग की। सो स्वामीजी उस समय पौराणिक थे और पौराणिक लोग भंग को शिव की बूटी समझते हैं और उसका पीना पाप नहीं समझते। तभी तो तमाम मन्दिरों में भंग का रगड़ा लगता है। और सनातन धर्म के अच्छे २ शास्त्रार्थ महारथी भंग पीकर

शास्त्रार्थ करने के लिये खड़े होते हैं। स्वामी दयानन्द को भी इन पौराणिक भंगड़ों की कु संगती से यह व्यसन लग गया था। अतः इसका उत्तर दायित्व भी पौराणिकों पर ही हैं आर्य-समाज पर नहीं है। तिस पर भी स्वामी जी इस व्यसन की निन्दा ही करते हैं जैसे लिखा है कि—

"दौर्भाग्यवश वहां मुझे एक बड़ा दोष लग गया अर्थात् भंग पीने का स्वभाव होगया सो कई बार उसके प्रभाव से मैं सर्वथा बेसुध हो जाया करता।"(दयानन्द जन्मस्थान निर्णय पृ०६७ पं०३)

आपने स्वामी जी की अधूरी इबारत लिखकर साहित्य हत्या का पाप किया है। अतः पौराणिक दयानन्द के सम्बन्ध में आर्य-समाज पर आक्षेप करना सर्वथा अनुचित है। हां पौराणिकमंडल में भंग तो साधारण वस्तु है। यहां पर तो योगी महात्माओं पर शराब पीने तक के कलंक लगाये गये हैं जैसे कि—

[१] सीता ने शराब के हजार घड़ों से गंगा की पूजा करने की प्रतिज्ञा की। [वाल्मीकी० अयोध्या० स० ५२।८९]

[२] सीता ने सौ घड़े शराब से यमुना की पूजा करने की प्रतिज्ञा की। (बाल्मी० अयो० स० ५६।२०)

[३] भरत ने सेना सहित भारद्वाज के आतिथ्य में शराब पी [वाल्मी० अयो० स० ९१।२१।५२]

[४] रामचन्द्र जी ने सीता यथा सभास्थ स्त्रियों समेत शराब और मांस का सवन किया। [वाल्मी० उत्तर० स० ४२।१८।२३]

[५] बलदेव जी कृष्ण के बड़े भाई शराब पीते थे।

[ब्रह्म वैवर्त० खं०४ अ० ११५।७३]

[६] पौराणिकों के यहां मादक द्रव्यों का प्रचार तो अनेक जनोक्तियों से भी किया जाता है।

उदाहरण थे—जिसने न पी गांजे की कली,

उस लड़के से लड़की भली।

कृष्ण चले वैकुण्ठ को राधा पकड़ी बांह।
यहां तम्बाकु पी ले ओ वहां तम्बाकु नांह॥
भंग गंग दो बहिन हैं रहती शिव के संग।
तरण तारणी गंग है तो लड्डू खानी भंग॥
हुक्का हुक्मल खुदाय का चिलम चौकड़ी दार।
भर भर देवें गोपियां पीवें कृष्ण मुरार॥

श्लोक

त्रिदौजाःपुरा पृष्टवान्ब्रह्मयोनिं धरित्रीतलेसारभूतं किमस्ति।
चतुर्भिर्मुखै रित्यवोचद्विरंचि स्तमाखु स्तमाखु स्तमाखु स्तमाखुः॥३॥

[सुभाषित रत्नभण्डागार तमाखु प्रकरण]

अर्थ—पहिले कभी इन्द्र ने ब्रह्मा से पूछा कि पृथ्वी पर सारभूत वस्तु क्या है ब्रह्मा ने अपने चारों मुखों से उत्तर दिया कि तम्बाकु तम्बाकु तम्बाकु तम्बाकु।

कहां तक लिखा जावे इन पाखण्डी पौराणिक धूर्तों ने योगीराज महात्मा नीति निपुण, शूरवीर, श्री कृष्णचन्द्र महाराज पर भी सुरापान का कलंक लगाये बिना नहीं छोड़ा। इस विषय मे पुराणों के लेख को पढ़ने तथा उनकी पौराणिक तसवीर के दर्शन करने की कृपा करें।

कृष्ण का पत्नियों सहित सुरापान

तस्मिन्नहनिदेवोऽपि सहान्तः पुरिकैर्जनैः ।
अनुभूय जलक्रीडां पानमासेवते रहः ॥ १७ ॥
भूषितानांवर स्त्रीणां चावँगीनांविशेषतः ।
ताभिः संपीयतेपानं शुभगन्धान्वितं शुभम् ॥ २१ ॥
एतस्मिन्नन्तरे बुद्धा मद्य पानात्ततः स्त्रियः ।
उवाच नारदः साम्बं साम्बोत्तिष्ठ कुमारक ॥२२॥
त्वां समाह्वयते देवो न युक्तं स्थातुमत्रते ।
तद्वाक्यार्थमबुद्धवैव नारदेनाथ चोदितः ॥ २३ ॥
गत्वा तु सत्वरं साम्बः प्रणाममकरोत् प्रभो ।
साष्टांगं चहरेः साम्बोविधिवद्वल्लभस्य च ॥ २४ ॥
एतस्मिन्नन्तरे तत्रयास्तु वै स्वल्प सात्त्विकाः ।
तं दृष्ट्वा सुन्दरं साम्बं सर्वाश्चुक्षुभिरे स्त्रियः ॥ २५ ॥
न सदृष्टः पुरायाभिरन्तः पुरनिवासिभिः ।
मद्यदोषात्ततस्तासांस्मृतिलोपात्तथानृप ॥ २६ ॥
स्वभावतोऽल्पसत्त्वानां जघनानि विसुस्रुवुः ॥ २७ ॥
नारदोऽप्यथ तं साम्बं प्रेषयित्वात्वरान्वितः ॥
आजगामाथतत्रैव सांबस्यानुप दैन तु ॥ ३२ ॥
आयान्तं ताश्चतं दृष्ट्वाप्रियंसौमनसमृषिम् ।
सह सैवोत्थिताः सर्वाः स्त्रियस्तं मदविह्वलाः ॥ ३३ ॥
तासामथोत्थितानां तु वासु देवस्य पश्यतः ।
भित्त्वावासांसि शुभ्राणिपत्रेषुपतितानितु ॥ ३४ ॥

[भविष्य० ब्राह्म० अ० ७३]

अर्थ—उस दिन श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज भी अपनी स्त्रियों समेत जल क्रीड़ा करने के पश्चात् एकान्त में शराब पी रहे थे ॥१७॥

विशेष तौर से सजी हुई तथा सुन्दर स्त्रियों के साथ बड़ी खुशबूदार शराब पी रहे थे ।। २१ ।। इतने में शराब पीने से जब स्त्रियें होश में आई तो नारद ने सांब को कहा कि हे कुमार सांब उठो ।। २२ ।। तुमको कृष्ण जी महाराज बुला रहे है। इसलिए तुम्हारा यहां ठहरना उचित नहीं है। नारद के अभिप्राय को न समझ कर नारद से प्रेरणा पाकर ।। २३ ।। सांब ने शीघ्रता से जाकर अपने प्रिय पिता कृष्णजी को विधि के अनुसार साष्टांग प्रणाम किया ।।२४ इतने में ही वहां पर जो थोड़ी ताकत वाली स्त्रियां थीं वे सब उस खूबसूरत सांब को देखकर चलायमान होगईं ।।२५।। जिन महलों में रहने वाली स्त्रियों ने पहिले कभी सांब को नहीं देखा था और फिर शराब के नशे में तथा स्मृति के लोप हो जाने से ।। २६ ।। जो स्वभाव से ही थोड़ी ताकतवाली स्त्रियां थीं उनकी जांघें टपकने लगीं ।। २७ ।। नारद भी सांब को भेज कर जल्दी से सांब के पीछे पीछे वहीं आगया ।। ३२ ।। उस प्यारे मनस्वी ऋषि नारद को आते देख कर शराब में मस्त हुई सब स्त्रियां एक दम खड़ी हो गईं ।। ३३ ।। श्री कृष्ण जी के देखते हुवे ही उन खड़े होने वाली स्त्रियों का वीर्य बारीक कपड़ों में से छन कर पत्तों पर गिर पड़ा ।। ३४ ।।

चूँकि शराब पीना "यथा मांसं यथा सुरा" अथर्व० ६।७०।१ के विरुद्ध होने से पाप है। अतः इस घटना को यदि योगी राज कृष्ण के सिर पर नारद भगवान का जूता" कहा जावे तो अनुचित न होगा।

पौराणिक शराबखाना
अर्थात
योगीराज श्रीकृष्ण के शिर पर
नारद भगवान् का जूता

नवीन मत के नये देवता

(दयानन्द भाव चित्रावली चित्र नं० ८)

के उत्तर में

शिव लिंग पूजा

पौराणिक दम्भ—दयानन्द भाव चित्रावली में ऊखल मूसल सुहागा उस्तरा तथा कुशा को रक्खा हुवा है और स्वामी दयानन्द जी उनके सामने हाथ बांधे बैठे हैं गोया इन सब चीजों की पूजा की आज्ञा स्वामी दयानन्द ने दी है। इस विषय में प्रमाण यजु० १२। ७० तथा संस्कार विधि के चूडा कर्म संस्कार तथा बलि वैश्व देव यज्ञ के प्रकरण का दिया गया है।

वैदिक बम्ब—आर्य्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में वेद के प्रमाण देकर लिखा है कि

(१) स पर्य्यगाच्छुक्रमकायम् ॥ यजु०४०।८॥

(२) न तस्य प्रतिमाऽस्ति ॥ यजु० ३२। ३॥

(३) अंधंतमः प्रविशन्ति ॥ यजु० ४०। ९॥

परमात्मा निराकार है। परमात्मा की मूर्ति नहीं बन सकती। परमात्मा के स्थानमें और की उपासना करने वाला नरकमें जाता है।

अतः आर्य्य समाज परमात्मा के स्थान में मूर्ति आदि किसी भी वस्तु की उपासना करने को वेद विरुद्ध होने से घोर पाप मानता है केवल वेद ही नही पुराणों में भी मूर्ति पूजा को निन्दित कर्म ही लिखा है जैसे कि भागवत स्कंध १० अ० ८४ श० १३ में मूर्ति पूजा करने वाले को गधे और बैल के समान लिखा है। इस लिये आर्य्य समाज पर मूर्ति पूजा का इल्जाम लगाना वितण्डा मात्र ही है।

(१) ऊखल मूसल की पूजा आर्य्य समाज के किसी भी ग्रन्थ में नहीं लिखी। हां संस्कार विधि में बलि वैश्व देव यज्ञ के प्रकरण में ऊखल मूसल के निमित्त से पैदा हुवे पाप के प्रति उपकारार्थ दूसरे प्राणियों को भोजन का भाग देना अवश्य लिखा है।

(२) उस्तरे तथा कुशा की पूजा भी कहीं नहीं लिखी। अपितु संस्कार विधि के मुण्डन संस्कार में उस्तरे तथा कुशा का उपयोग अवश्य लिखा है। वहां आये मन्त्रों का अर्थ यजुर्वेद भाष्य में ईश्वर परक किया है।

(३) यजु० १२। ७० में सुहागे का वर्णन ही नहीं है अपितु वेद के सीता शब्द का अर्थ हल की आड जो जमीन में निकली जाती है। उसका वर्णन है। और उसी जमीन को घी दूध गोबर आदि की खाद डाल कर विशेष पौदों के लिये सुधारना लिखा है और इन सभी स्थानों में पूजा शब्द ही मौजूद नहीं है।

हां पौराणिक धर्म्म में परमात्मा के स्थान में ईंट पत्थर वृक्ष हड्डी मूर्ति क़बर मढी पशु पक्षी आग पानी मिट्टी आदि सभी वस्तुओं की पूजा जाइज़ है। यहां तक कि भग और लिंग की पूजा भी लिखी है प्रमाण सहित चित्र देखने की कृपा करें।

लिंग पूजा

दारु नाम वनं श्रेष्ठं तत्रासन्नृषि सत्तमाः।
शिव भक्ताः सदाः दा नित्यं शिव ध्यान परायणाः ॥६॥
ते कदा चिद्वने याताः समिधा हरणाय च।
सर्वे द्विजर्षभाः शैवाः शिव ध्यान परायणाः ॥८॥
एतस्मिन्नंतरे साक्षाच्छंकरो नील लोहितः।
विरूपं च समास्थाय परीक्षार्थं समागतः ॥९॥
दिगम्बरोऽति तेजस्वी भूति भूषण भूषितः।
स चेष्टां सकरद्वांच हस्ते लिङ्ग विधार यन् ॥१०॥
मनसा च प्रियं तेषां कर्त्तुं वै वनवासिनाम्।
जगाम त द्वनं प्रीत्था भक्त प्रीतो हरः स्वयम् ॥११॥
तं दृष्ट्वा ऋषि पत्न्यस्ताः परं त्रास मुपागताः।
विह्वला विस्मिताश्चान्याः समाजग्मुस्तथा पुनः ॥१२॥
आलिलिंगुस्तथा चान्याः करं धृत्वा तथा पराः।
परस्परं तु संघर्षात्संमग्नास्ताः स्त्रियस्तदा ॥१३॥
एतस्मिन्नेव समये ऋषिवर्याः समागमन्।
विरुद्धं तं च ते दृष्ट्वा दुःखिताः क्रोधमुच्छिताः ॥१४॥

तदा दुःखमनुप्राप्ता : कोऽयं कोऽयं तथा ब्रुवन् ।
समस्ता ऋष यस्ते वै शिव माया विमोहिता : ॥१५॥
यदा च नोक्तवान् किंचित्सोऽवधूतो दिगम्बरः ।
ऊचुस्तं पुरुषं भीम तदा ते परमर्षयः ॥१६॥
त्वया विरुद्धं क्रियते वेदमार्ग विलोपि यत् ।
ततस्त्वदीयंतल्लिंग पततां पृथिवि त ले ॥१७॥
इत्युक्ते तु तदा तैश्च लिंगं च पतितो क्षणात् ।
अवधूतस्य तस्याशु शिवस्याद्भुत रूपिणः ।१८॥
तल्लिंगं चाग्निवत्सर्वं यद्ददाह पुरः स्थितम् ।
यत्र यत्र च तद्याति तत्र तत्र दहेत्पुनः ॥१६॥
पाताले च गतं तच्च स्वर्गे चापि तथैव च ।
भूमौ सर्वत्र तद्य तं न कुत्रापि स्थिरं हितत् ॥२०॥
लोकाश्च व्याकुला जाता ऋषयस्तेऽति दुःखता : ।२१॥
दुःखिता मिलिता : शीघ्र ब्रह्माणं शरणं ययु : ॥२२॥
मुनीशांस्तांस्तदा ब्रह्मा स्वयं प्रोवाच वै तदा ॥३१॥
आराध्य गिरीजा देवीं प्रार्थयन्तु सुरा : शिवम् ।
यानि रूपा भवेच्चे द्वै तदा तत्स्थिरतां व्रजेत् । ३२॥
पूजितः पर या भक्तया प्रार्थितः शंकरस्तथा ।
सु प्रसन्नस्ततो भूत्वा तानुवाच महेश्वरः ॥४४॥
हे देवा ऋषयः सर्वे मद्वचः शृणुतादरात् ।
योनि रूपेण मल्लिंगं धृतं चेत्स्यात्तदा सुखम् ॥४५॥
पार्वतीं च विना नान्या लिंगं धारयितुं क्षमा ।

नयः धृतं च भल्लिग द्रुत शान्तिं गमिष्यति ॥४६॥
प्रसन्नां गिरीजां कृत्वा वृषभध्वजमेव च ।
पूर्वोक्तं च विधिं कृत्वा स्थापितं लिंगमुत्तमम् ॥४८॥

शिव कोटि रुद्र संहिता ४ अ० १२ ॥

अर्थ—दारु नाम का एक बन था। वहां पर सत्पुरुष लोग रहते थे जो शिव के भक्त थे। तथा नित्य प्रति शिव का ध्यान किया करते थे ॥ ६ ॥ वे कंभी लकड़ियां चुनने के लिये सबके सब श्रेष्ठ ब्राह्मण शिव के भक्त तथा शिव का ध्यान करने वाले चले गये ॥ ८ ॥ इतने में साक्षात महादेव जी विकट रूप धारण कर उनकी परीक्षा के निमित्त आ पहुँचे ॥ ९ ॥ नंगे अति तेजस्वी विभूति के भूषण से शोभायमान कामियों के समान दुष्ट चेष्टा करते हुये हाथ में लिंग धारण करके ॥ १० ॥ मन से उन बन वासियों का भला करने के लिये भक्तों पर प्रसन्न होकर शिव जी स्वयं प्रीति से उस बन में गये ॥ ११ ॥ उनको देखकर ऋषियों की पत्नियां अत्यन्त भयभीत हो गईं। व्याकुल तथा हैरान हुईं। कई वापिस आगईं ॥ १२ ॥ कई आलिंगन करने लगीं कई ने हाथ में धारण कर लिया तथा परस्पर के संघर्षण से वे स्त्रियां मग्न हो गईं ॥ १३ ॥ इतने में ही ऋषि महात्मा आगये। इस प्रकार के विरुद्ध काम को देखकर वे दुखी हुये क्रोध से मूर्छित हो गये ॥ १४ ॥ तब दुःख को प्राप्त हुये कहने लगे यह कौन है यह कोन है वे सब के सब ऋषि शिव की माया से मोहित होगये ॥ १५ ॥ जब उस नंगे

अवधूत ने कुछ भी उत्तर न दिया तब वे परम ऋषि उस भयङ्कर पुरुष को यूँ कहने लगे ॥ १६ ॥ तुम जो यह वेद के मार्ग को लोप करने वाला विरुद्ध काम करते हो इसलिये तुम्हारा यह लिंग पृथ्वी पर गिर पड़े ॥ १७ ॥ उनके इस प्रकार कहने पर उस अद्भुत रूप धारी अवधूत शिव का लिंग उसी समय गिर पड़ा ॥ १८ ॥ उस लिंग ने सब कुछ जो आगे आया अग्नि की भांति जला दिया जहां जहां वह जाता था वहां वहां सब कुछ जला देता था ॥ १९ ॥ वह पाताल में भी गया वह स्वर्ग में भी गया वह भूमि में सब जगह गया। किंतु वह कहीं भी स्थिर नहीं हुआ ॥ २० ॥ सारे लोक लोकान्तर व्याकुल हो गये तथा वे ऋषि अति दुखित हुये ॥ २१ ॥ वे दुखी हुये सब मिल कर ब्रह्मा के पास गये ॥ २२ ॥ ब्रह्मा उन ऋषियों को स्वयं कहने लगे ॥ ३१ ॥ हे देवताओ ! पार्वती की आराधना करके शिव की प्रार्थना करो। यदि पार्वती योनि रूप हो जावे तो तब वह लिंग स्थिरता को प्राप्त हो जावेगा ॥ ३२ ॥ तब उन ऋषियों ने परम भक्ति से शंकर की प्रार्थना और पूजा की तब अति प्रसन्न होकर महादेव जी उनसे बोले ॥ ४४ ॥ हे देवता और हे ऋषि लोगों ! आप सब मेरी बात को आदर से सुनें। यदि मेरा लिंग योनि रूप से धारण किया जावे तब शांति हो सकती है ॥ ४५ ॥ मेरे लिंग को पार्वती के बिना और कोई धारण नहीं कर सकता। उससे धारण किया हुआ मेरा लिंग शीघ्र ही शान्ति को प्राप्ति हो जावेगा ॥ ४६ ॥ पार्वती तथा शिव को प्रसन्न करके और पूर्वोक्त विधि के अनुसार वह उत्तम लिंग स्थापित किया गया।

शिव लिंग पूजा अर्थात् निराकार भगवान की पूजा का [illegible]

शैतान का जूता

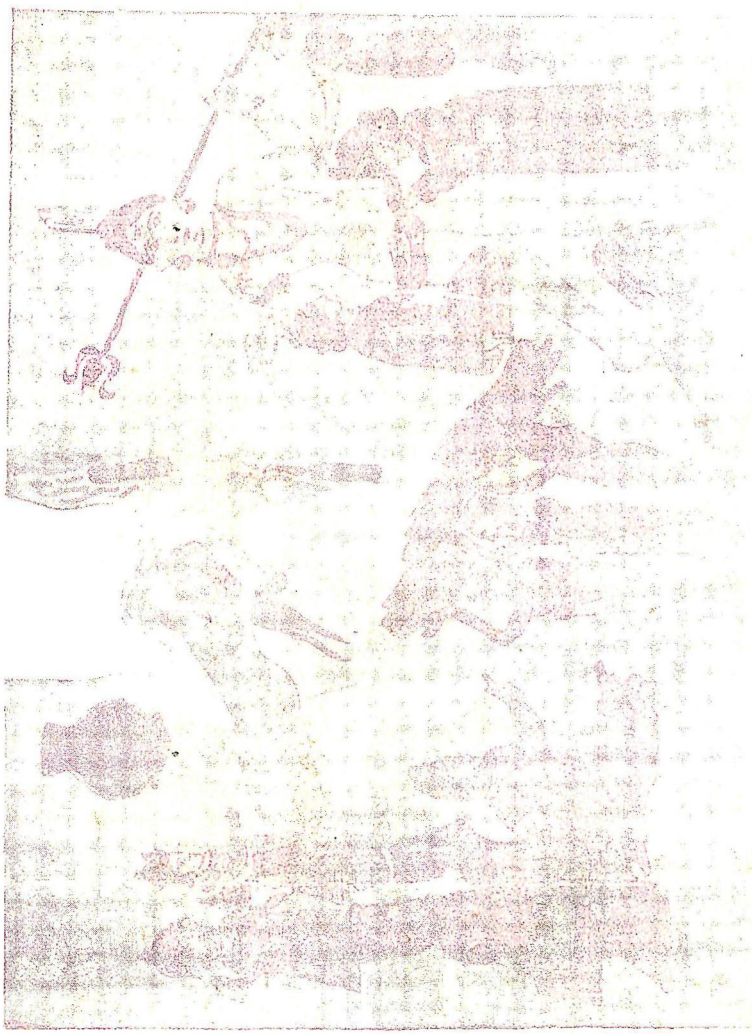

॥ ४८ ॥ ऐसा प्रतीत होता है कि शिव लिंग पर पानी का घड़ा टपकता हुआ इसलिये रक्खा जाता है कि कहीं यह लिंग ज्वाला मुखी पर्वत की भांति फिर न फट पड़े और ज़मीन आस्मान को भस्म न करदे। ऐसी शिव पूजा की कौन दाद न देगा।

चूंकि ईश्वर की मूर्ति बनाना तथा ईश्वर के स्थानों में और वस्तु की उपासना करना वेद के विरुद्ध होने से महा पाप है। अतः इस शिव लिंग पूजा को "निराकार भगवान की पूजा पर निर्लज्ज शैतान का जूता" ही कहना मुनासिब है।

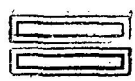

दाम्पत्य प्रेम [दयानन्द भाव चित्रावली चित्र नं ६]

के उत्तर में

सनातन धर्म की नंगी तस्वीर

पौराणिक दम्भ—दयानन्द भाव चित्रावली में स्वामी दयानन्दजी को बैल के पीछे नंगा खड़ा करके बैल से मैथुन करते हुये दिखाया गया है और प्रमाण में यजुर्वेद २१। ६० दयानन्द भाष्य देकर साबित करने की कोशीश की है कि स्वामी जी ने बैल से भोग करने की आज्ञा दी है।

राम पूजा और शैतान की तालीम—

बैल मेंढे से किया करता था वह भोगो विलास ॥

(पृ० ६८ पं० ३)

वैदिक बम्ब—यजुर्वेद में आया है कि—

अश्विभ्यां छागेन सरस्वत्यै मेषेणेन्द्राय ऋषभेणाक्षान्

(यजु० २१। ६०)

हे मनुष्यो! प्राण और अपान के लिये दुख विनाश करने वाली छेरी आदि पशु से वाणी के लिये मेढा से परम ऐश्वर्य के लिये बैल से भोग करें (उपयोग लें)

भावार्थ—जो मनुष्य छेरी आदि पशुओं के दूध आदि से प्राण अपान रक्षा के लिये चिकने और पके हुवे पदार्थों का भोजन कर उत्तम रसों को पीके वृद्धि को पाते हैं वे अच्छे सुख को प्राप्त होते हैं।

(दयानन्द भाष्य)

यहां पर पाखण्डी पोप ने भोग शब्द के मैथुन अर्थ लेकर ऐसी कल्पना की है। हालांकि स्वामी जी ने अपने भाष्य में "भोग करें" का अभिप्राय कोष्ठ में "उपयोग लें" लिख भी दिया है। जिस से स्वामी जी का अभिप्राय स्पष्ट है कि बकरी भेड बैल आदि को मुनासिब तौर से इस्तेमाल करके लाभ उठावें। और स्वामी जी ने अपने इस अभिप्राय को भाष्य के भावार्थ में और भी स्पष्ट कर दिया है किन्तु पौराणिक पोप ने यहां पर भोग का अर्थ मैथुन ही लिया है। हम पूछते हैं कि यदि हर एक स्थान में भोग के अर्थ मैथुन ही होते हैं तो "ठाकुर जी को भोग लगाओ" "राधा जी को भोग लगाओ" देवी जी को भोग लगाओ" क्या इन वाक्यों का भी वही अर्थ होगा शरश शरम शरम बात यह है कि पौराणिक साहित्य में पशुओं से मैथुन करने की घटनायें माजूद हैं अतः पौराणिक लोगों को सब स्थानों में पशु मैथुन ही नजर आता है प्रमाण के लिये चित्र नं० ३ तथा पौराणिक अश्वमेध यज्ञ का चित्र देखने की कृपा करें। जो आगे दिया जाता है।

महिषी की अश्व से गर्भधारणार्थ

प्रार्थना

(१) महिषी अश्व समीपे शेते। अश्व देवत्यम्। हे अश्व, गर्भधं गर्भदधाति गर्भधं गर्भधारकं रेतः अहम् आ आजानि आकृष्यशिक्षामि। तं च गर्भधं रेतः आ अजासि आकृष्य क्षिपसि॥ महीधर यजु० २३। १९॥

महिषी का योनि में लिंग स्थापन

(२) महिषी स्वयमेवाश्वशिश्नमाकृष्य स्वयोनौस्थापयति। वाजी अश्वो रेतो दधातु मयि वीर्यं स्थापयतु। कीदृशोऽश्वः। वृषा सेक्ता रेतोधा : रेतो दधातीति रेतोधा : वीर्यस्य धारयिता॥ महीधर यजु० २३। २०॥

गर्भाधानविधि

(३) हे वृषन् सेक्तः अश्व, महिष्या गुदमव गुदोपरि रेतो धेहि वीर्यं धारय। कीदृश्या : उत्सक्थ्या : उत् ऊर्ध्वे सक्थिनीऊरु यस्याः सा उत्सक्थी तस्याः। कथं तदाह। अञ्जि लिंगं संचारय। लिंगं योनौ प्रवेशय योऽञ्जिः स्त्रीणां जीव भोजनः जीव यति जीवः भोज यति भोजनः। जीवश्चासौ भोजनश्च जीव भोजनः। यस्मिन् लिङ्गे योनौ प्रविष्टे स्त्रियो जीवन्ति भोगांश्च लभन्ते तं प्रवेशय।॥महीधर यजु० २३।२१॥

(१) अर्थ—यजमान की स्त्री घोड़े के पास सोती है। इस मन्त्र का

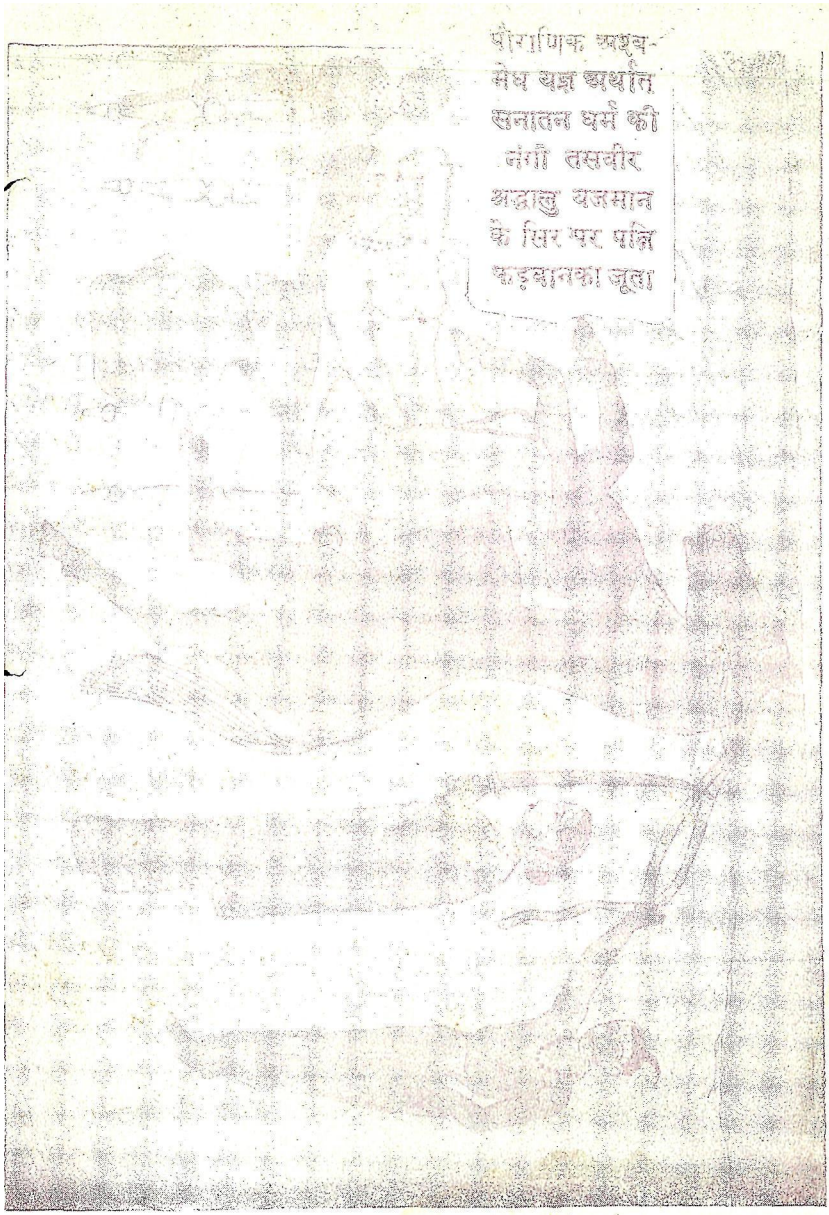

पौराणिक अश्व-
मेध यज्ञ अर्थात
सनातन धर्म की
नंगी तसवीर
श्रद्धालु यजमान
के सिर पर पत्नि

देवता अश्व है। यजमान की स्त्री घोड़े से कहती है कि हे अश्व! मैं तेरे गर्भ धारण करने वाले वीर्य को खैंच कर अपने अंदर दाखिल करती हूं। और उस गर्भ धारण करने वाले अपने वीर्य को तू भी खैंच कर मेरे अंदर दाखिल करता है। (यजुर्वेद पर महीधर भाष्य अध्याय २३ मंत्र १९)

(२) यजमान की स्त्री अपने आप ही घोड़े के लिंग को खैंच कर अपनी यानि में क़ायम करती है और कहती है कि घोड़ा मेरे अन्दर वीर्य स्थापित कर। क्यों कि वह घोड़ा वीर्य को स्थापित करने के क़ाबिल है॥ महीधर २३। २०॥

(३) हे वीर्य को सींचने में समर्थ अश्व! तू यजमान की पत्नि की गुदा के ऊपर वीर्य धारण कर। जिस स्त्री की दोनों टांगें ऊपर को उठाई हुई हैं। तू अपने उस लिंग को योनि में दाखिल कर कि जिस लिंग के योनि में प्रवेश होने पर स्त्रियें जोती हैं और भोगो को प्राप्त करती हैं॥ महीधर २३। २१॥

कौशल्या का अश्व से संयोजन

(१) पतत्रिणा तदा साध्वं सुस्थितेन च चेतसा।
अवसद्रजनीमेकां कौशल्या धर्मकाम्यया॥ ३४॥
होताऽध्वर्यु स्तुथोद्गाता हयेन समयोयन्।
महिष्या परिवृत्त्याथ वावातामपरां तथा॥ ३५॥

(बाल्मीकि० बाल० स० १४)

(१) अर्थ—कौशल्या धर्म्म की कामना करती हुई प्रसन्न मन के साथ उस घोड़े के साथ एक रात सोई। होता अध्वर्यु और उद्गाता ने महिषी परिवृत्ता तथा वावता को घोड़े के साथ नियोजित किया (बाल्मीकि)

(२) चूंकि स्त्री का पशु के साथ मैथुन "रेतोमूत्रं विजहाति" इत्यादि यजु० १९। ७६ के विरुद्ध होने महापाप × तथा पामर पन है। अतः इस विधि को "श्रद्धालु यजमान के सिर पर पत्ति फड़वान का जूता" ही कहना उचित है।

नियोगन बीवी और महाशय जी

(दयानन्द भाव चित्रावली
चित्र नं० १०)

के उत्तर में

विचित्र नियोगशाला

पौराणिक दम्भ—दयानन्द भाव चित्रावली में सत्यार्थ प्रकाश के नियोग प्रकरण का प्रमाण देकर पति के परदेश जाने पर नियोग की आज्ञा को मुख्य रख कर मखौल किया गया है कि महाशय जी के परदेश जाने पर बीवी ने नियोग करके सन्तान पैदा करली। महाशय जी वापिस आकर हैरान हुये। इसी प्रकार की तसवीर दी है।

वैदिक दम्भ—वेद की आज्ञा के अनुसार सभा सोसाइटी के क़ायदे कानून के मातहत बिरादरी तथा रिश्ते दारों की रज़ामन्दी से पंचायत द्वारा जो स्त्री-पुरुष का विधि पूर्वक सम्बन्ध है। वह धर्म है चाहे उसका नाम बिवाह हो चाहे नियोग, पुनर्बिवाह विधवा बिवाहादि हो। तथा वेद की आज्ञा से विरुद्ध सभा सोसाइटी के

कानून के बरखिलाफ बिरादरी तथा पंचायत की रजामन्दी के बिना जो स्त्री-पुरुष का प्राइवेट सम्बन्ध है उसका नाम व्यभिचार या जिनाहकारी है।

नियोग को व्यभिचार नहीं कहा जा सकता क्योंकि—

(१) वेद में नियोग की आज्ञा मौजूद है जैसे कि—

कुहस्विद्दोषा ॥ऋ० १० । ४० । २ ॥

इयं नारी पति लोकं वृणाना ॥ अथर्व० १८।३।१॥

या पूर्वं पतिं विंत्त्वा । ॥ अथर्व० ६ । ५ । २७

इत्यादि अनेक मन्त्र नियोग की आज्ञा देते हैं

(२) कानून की किताब मनुस्मृति भी नियोग की आज्ञा देती है। जैसे कि—

देवराद्वा सपिण्डाद्वा । मनु० ६ । ५६ ।

यवीयाञ्ज्येष्ठ भार्यायाम् मनु० । ६ । १२० ।

हरेत्तत्र नियुक्तायाम् । मनु० ६ । १४५ ।

इत्यादि अनेकों श्लोक नियोग की आज्ञा तथा नियोग से उत्पन्न सन्तान को जायदाद का वारिस प्रतिपादन करते हैं।

(३) इतिहास भी नियोग की गवाही देता है जैसे कि—

(क) पवन ने केसरी की स्त्री अंजना से नियोग करके हनुमान पैदा किया (बाल्मी० किष्कं० स० ६६ । ३०)

(ख) व्यास ने विचित्रवीर्य की स्त्री अम्बिका अम्बालिका तथा दासी से नियोग करके धृतराष्ट्र पाण्डु तथा विदुर को पैदा किया।

(महा० आदि० अ० १०६)

(ग) पाण्डु की स्त्री कुन्ती ने धर्मवायु तथा इन्द्र से नियोग करके युधिष्ठिर भीम तथा अर्जुन को पैदा किया (महा० आदि०)

(घ) माद्री ने अश्विनी कुमारों से नियोग करके नकुल और सहदेव को पैदा किया (महाभारत आदि०)

(ङ) राजा बलि के जीते हुये उसकी स्त्री सुदेष्णा ने दीर्घतमा से नियोग करके अनेक पुत्र पैदा किये (महा० आदि०)

(च) गांधारी के गर्भवती होने पर धृतराष्ट्र ने एक वैश्या से नियोग करके युयुत्सु को पैदा किया (महा० आदि०)

(छ) माद्री के तीन कुन्ती के पांच द्रौपदी के पांच जटिला के सात दार्क्षी के दश तथा दिव्या देवी के इक्कीस पति थे इत्यादि अनेक उदाहरण मौजूद हैं। अतः नियोग वेद स्मृति तथा सदाचार के अनुकूल होने से धर्म है।

हां पौराणिक सनातन धर्म में बिधवा बिवाह तथा नियोग के न मानने के कारण व्यभिचार, गर्भपात, वेश्यापन, ईसाई तथा मुसलमानों के घरों को आवाद करके गौ घातक सन्तान पैदा करना, तथा गर्भघात से तीर्थों को अपवित्र करना और अदालतों में ऐसे केस जाने से दुर्दशा का होना, ही यदि धर्म माना जाता है तो ऐसे सनातन धर्म को दूर से ही प्रणाम है।

पति के प्रदेश जाने पर नियोग भी नियोग की एक शाख है।

(१) दमयन्ती ने अपना दूसरा स्वयम्बर नल के गुम होने पर रचा। जिसमें दमयन्ती को वरने के लिये अयोध्या से ऋतुपर्ण राजा आया (महा० बन० अ० ७०)

(२) गौतम के स्नानार्थ जाने पर इन्द्र ने अहिल्या से नियोग किया (बाल्मी० बाल० स० ४८)

(३) वृहस्पति की गैर हाज़िरी में तारा ने चन्द्रमा से नियोग करके बुध नाम का पुत्र पैदा किया (भविष्य० उत्तर० अ० ६६)

(४) त्रिपाठी के बाहर जाने पर कामिनी ने एक निषाद से नियोग करके व्याध कर्मा पुत्र पैदा किया (भविष्य० प्रति सर्ग०-खं० १ अ० ३३)

(५) महादेव जी के बाहर जाने पर पीछे से पार्वती ने गणेश को पैदा कर लिया (शिव० रुद्र० कुमार० अ० १३)

(६) उत्तथ्य की गैर हाज़िरी में वृहस्पति ने गर्भवती ममता से विचित्र नियोग करके भारद्वाज नाम के पुत्र को पैदा किया। उसका पूर्ण इतिहास तथा चित्र देखने की कृपा करें।

वृहस्पति का गर्भवती ममता से बलात्कार

इमञ्चैवात्र वक्ष्येऽहमिति हासं पुरातनम् । ७ ।
अथोतथ्यइतिख्यात आसीद्धौमानृषिः पुरा ।
ममता नाम तस्यासीद्भार्य्या परम सम्मता ॥ ८ ॥
उ थ्यस्य यवीयमांस्तु पुरोधास्त्रिदिवैकसाम ।
वृहस्पतिर्बृहत्तेजो ममतामन्व पद्यत ॥ ९ ॥

उवाच ममता तन्तु देवरं वदतां वरम ।
अन्तर्वत्नी त्वहं भ्राता ज्येष्ठे नारस्य नो मिति ॥ १० ॥
अयञ्च मे महाभाग कुक्षावेव बृहस्पते ।
औतथ्यो वेदमत्रापि षडङ्ग पुत्यधीपने ॥ ११ ॥
अमोघरेतास्त्वञ्चापि द्वयोर्नास्त्वत्र सम्भवः ।
नस्मादेवञ्च न त्वद्य उपारमितुमर्हति ॥ १२ ॥
एवमुक्तस्तदा सम्यग्बृहस्पतिरधीरधीः ।
कामात्मानं तदात्मानं ने शशाक नियज्यितुम ॥१३॥
स बभूव ततः कामी तया सार्द्धं मन्यामया ।
उत्सृजन्तन्तु तं रेतः स गर्भस्थोऽभ्यभाषत ॥ १४ ॥
भोस्तात मागमः कामं द्वयोर्नास्तीर सम्भवः ।
अल्याव काशो भगवन् पूर्वं चार मिहागतः ॥ १५ ॥
अमोघ रेताश्च भवान्न पीड़ां कर्त्तुमर्हसि ।
अश्रुत्वै व तु त द्वाक्यं गर्भस्थस्य बृहस्पतिः ॥ १६ ॥
जगाम मैथुनायैव ममतां चारु लोचनाम् ।
शुक्रोत्सर्ग ततो बुध्द्वा तस्या गर्भ गतो मुनिः ।
पद्भ्यामरोध यनेमार्गं शुक्रस्य च बृहस्पतेः ॥ १७ ॥
स्थानम प्राप्तमथ तद्रेतः प्रति हतं तदा ।

प पात सहसा भूमौ ततःक्रुद्धो बृहस्पतिः ॥ १८ ॥
तद्दृष्ट्वा पतितं शुक्रं शशाप स रुषान्वितः ।
उतथ्य पुत्रं गर्भस्थं निर्भर्त्स्य भगवान् षिः ॥ १६ ॥
यन्मां त्वमीदृशे काले सर्वभूतेप्सिते सति ।
एवमात्थ व चस्तस्मात्तमो दीर्घं प्रवेक्ष्यति ॥ २० ॥
स वै दीर्घ तमानाम शापादृषिरजायत ।
बृहस्पते बृहत्कीर्त्तेर्बृहस्पतिरिवौजसा ॥ २१ ॥
जात्यन्धो वेदवित् प्राज्ञः पत्नीं लेभे स विद्यया ।
तरुणीं रुप सम्पन्नां प्रद्वेषीं नाम ब्राह्मणीम् ॥२२॥
स पुत्राञ्जन यामा स गौतमा दीन्म हायशा : ॥२३॥

(महा० आदि० अ० १०४)

बृहस्पतिर्मुनिवरो मोहितः शिवमायया ।
भ्रातृपत्न्या वशी रेमे भरद्वाजस्ततोऽभवत् ॥ ३८ ॥

(शिव० उमा० अ० ४)

अर्थ—मैं यहा पर एक पुराना इतिहास सुनाता हूं ॥ ७ ॥ पूर्व काल में उतथ्य नाम का प्रसिद्ध महान ऋषि तथा ममता नाम वाली उसकी परम सुन्दरी स्त्री थी ॥ ८ ॥ उतथ्य का छोटा भाई देवताओं का पुरोहित महान् तेजस्वी बृहस्पति ममता पर मोहित होगया ॥ ६ ॥ बोलने वालों में श्रेष्ठ देवर बृहस्पति को ममता ने

कहा। मैं तेरे बड़े भाई से गर्भवती हूं अतः तू सबर कर ॥ १० ॥ और हे महाभाग यह मेरी कोख में उतथ्य का पुत्र यहां भी छै अंगों सहित वेद को पढ़ रहा है ॥ ११ ॥ और आपका वीर्य भी व्यर्थ जाने वाला नहीं है और दोनों का यहां गर्भ में रहता संभव नहीं इसलिये आज तुझको ऐसा नहीं करना चाहिये। टल जाना ही बेहतर है ॥ १२ ॥ इस प्रकार से कहे जाने पर विद्वन् वृहस्पति काम से मोहित अपनी आत्मा को काबू में न कर सका ॥ १३ ॥ तब वह कामी वृहस्पति उस अकामा ममता के साथ मैथुन में प्रवृत होगया। उस वीर्य को छोड़ते हुवे वृहस्पति को गर्भ में बैठा हुवा मुनि कहने लगा ॥ १४ ॥ हे चाचा जी काम में मोहित मत होवो यहां पर स्थान थोड़ा है और में यहां पर पहिले ही आया हुवा हूं ॥ १५ ॥ आपका वीर्य व्यर्थ जाने वाला नहीं अतः आप मुझे कष्ट न दें। उस गर्भ में बैठे हुवे की बात को न सुनकर वृहस्पति ॥ १६ ॥ उस सुन्दर नेत्र वाली ममता के साथ मैथुन में प्रवृत्त होगया उसके गर्भ में बैठे हुवे मुनि ने वीर्य के प्रवेश का समय जान कर वृहस्पति के वीर्य के रास्ते को दोनों पांवों से रोक दिया ॥ १७ ॥ तब उसका वीर्य स्थान को प्राप्त न होकर वापिस धकेला हुवा अचानक ज़मीन पर गिर पड़ा तब वृहस्पति ने क्रोध में आकर ॥ १८ ॥ गुस्से से वीर्य को गिरे हुवे देख कर शाप दिया और उतथ्य के पुत्र को भगवान् ऋषि वृहस्पति ने गर्भ में बैठे हुवे को ही धमकाया ॥ १९ ॥ जो तू मुझको सब प्राणियों से वांछित इस प्रकार के समय में इस प्रकार की बात कहता है। इस लिये

तू महांधकार में प्रवेश करेगा ॥ २० ॥ वह ऋषि के शाप से दीर्घ-तमा नाम का ऋषि पैदा हुवा। जो कि तेजस्वी वृहस्पति के समान ही था ॥ २१ ॥ और जन्म से अन्धा वेद पाठी तथा बुद्धिमान था। जिसने विद्या के वल से पत्नि को प्राप्त किया जो कि युवती तथा सुन्दरी ब्राह्मणी थी जिसका नाम प्रद्वेषी था ॥ २२ ॥ उसने गौतम आदि पुत्रों को पैदा किया ॥ २३ ॥

(महाभारत)

श्रेष्ठ मुनि वृहस्पति ने शिव की माया से मोहित होकर अपने भाई की स्त्री से समागम किया। जिससे भरद्वाज पैदा हुवे ॥ ३८ ॥

(शिव)

चूंकि यजु० १९। ७६ के अनुसार गर्भिणी से समागम करना पाप तथा गर्भ पर गर्भ का होना तथा सन्तानोत्पत्ति असंभव है। अतः इस घटना को "गर्भाधान के सिर पर काम के तूफान का जूता" कहना ही मुनासिब है।

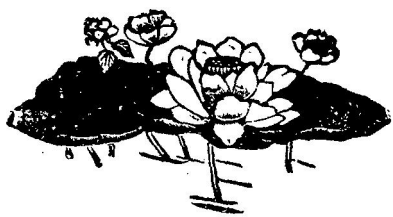

पौराणिक गर्भाधान अर्थात् ऋषियों के आचार पर वद कुठार का जूता

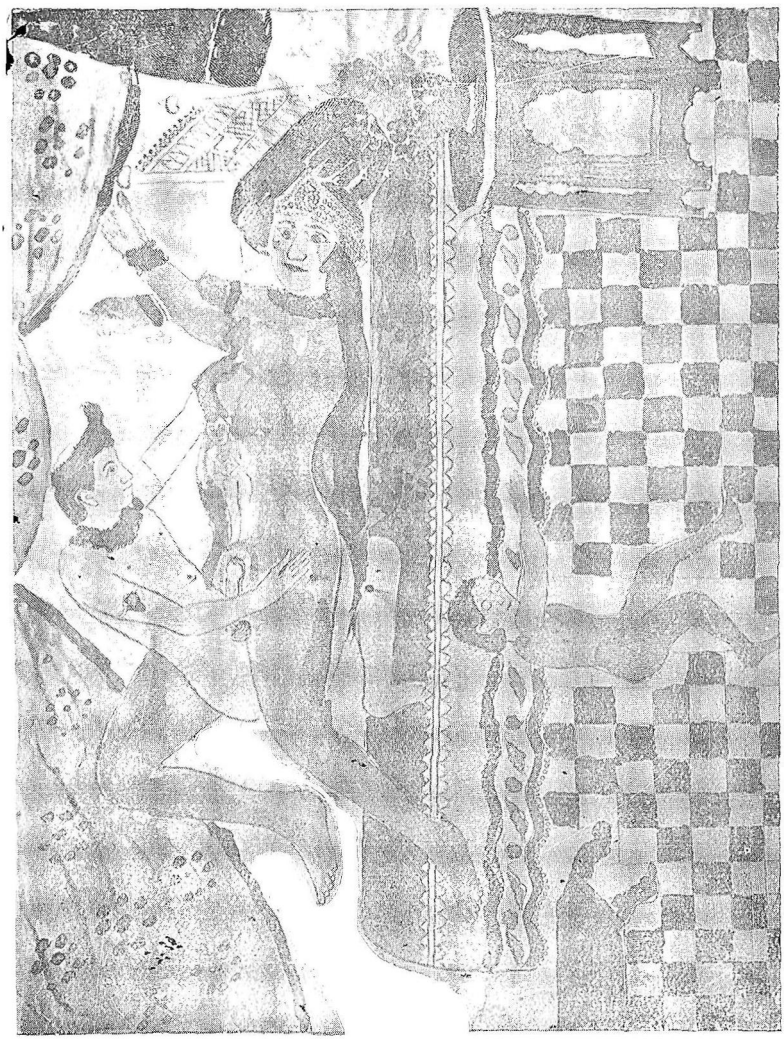

अनोखा व्यापार (दयानन्द भाव चित्रा० चित्र नं० १२)

के उत्तर में

पौराणिक यज्ञशाला

——::०::——

पौराणिक दम्भ— दयानन्द भाव चित्रावली में स्वामी जी को उल्लूओं का पालने वाला प्रकट करके मखौल उड़ाया गया है। और तसवीर में स्वामी दयानन्द को उल्लुओं की कतार के पीछे संरक्षक के तौर से दिखाया गया है। और प्रमाण यजु० २४। २३ के स्वामी जी के भाष्य का दिया है। जिसमें स्वामीजी ने उल्लुओं के पालने में वेद का अर्थ किया है।

वैदिक बम्ब—वेद में आता है कि—

वनस्पतिभ्यउलूकानालभते ॥ यजु० २४।२३ ॥

वनस्पति अर्थात् बिना पुष्प फल देने वाले वृक्षों के लिये उल्लूपक्षियों को प्राप्त होवें।

भावार्थ—जो मुरगा आदि पक्षियों के गुणों को जानते हैं। वे सदा इनको बढ़ाते हैं।

(दयानन्द भाष्य)

स्वामी दयानन्द जी के भाष्य से स्पष्ट है कि वेद की आज्ञा है कि सब पक्षियों की रक्षा करते हुवे उनसे यथा योग्य उपकार लिया

जावे। इस भाव को महीधर ने न समझ कर सम्पूर्ण पक्षियो मार कर उनसे यज्ञ करने का अर्थ किया है मारने वाले भाष्य से रक्षा करने वाला भाष्य ही सर्वत्र श्रेष्ठ माना जावेगा। हां पोप जी को शंका तो यह है कि उल्लुओं की रक्षा क्यों की जावे। महाराज क्या उल्लू उपकारीजीव नही है। उल्लू चूहों को मार कर खेती तथा वनस्पति कोरक्षा करता है। तथा उल्लू संसार में न रहें तो हम पौराणिकों को उपमा किससे दें।

"उल्लू को न विलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्" इत्यादि— यथा द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने तो उल्लूओं से शिक्षा लेकर ही युधिष्ठिर की सेना पर रात को छापा था। तथा गरुड़ पुराण आचार खण्ड अ० १९३ श्लोक १४। १५ में तो उल्लू के विष्ठा मूत्र मांस रोम तथा रुधिर की धूनी ज्वर तथा पागलपन का इलाज करना लिखा है।

मनुष्य मांस से हवन अर्थात नरमेध यज्ञ

(न० १)

ततः सयाजया मास सोमकं तेन जन्तुना।
मातरस्तु बलात् पुत्रमपाकर्षुः कृपान्विताः॥ २॥
हा हताः स्मेतिवाशन्त्य स्तीव्रशोक समाहिताः।
रुदन्त्यः करुणंचापि गृहीत्वा दक्षिणे करे॥ ३॥
सव्येपाणौगृहीत्वा तु याजकोऽपिस्मकर्षति।
कुरीणामिवार्त्तानां समाकृष्यतु तं सुतम्॥ ४॥

विशस्य चैनं विधिवद्वपामस्य जुहावसः ।
वपायां हूयमानायांगन्धमाघ्रायमातरः ॥ ५ ॥
आर्त्तानिपेतुः सहसा पृथिव्यां कुरुनन्दन ।
सर्वाश्चगर्भानालभं स्ततस्ताः परमाङ्गनाः ॥ ६ ॥

(महा० बन० अ० १२८)

अर्थ—तब याजक ने जन्तु नामक पुत्र से राजा सोमक का यज्ञ करवाना आरम्भ किया । माताओं ने कुपायमान होकर जबरदस्ती अपने पुत्र को खेंच लिया ॥ २ ॥ माताओं ने तीव्र शोक से व्याकुल होकर करुणा पूर्वक राते हुवे बालक को दायें हाथ में पकड़ कर हाय हम मारी गईं इस प्रकार चीखें मारीं ॥ ३ ॥ याजक भी बांयें हाथ से पकड़ कर खैंचता था । कुररी की भांति रोती हुई व्याकुल माताओं में से उस पुत्र को खेंच कर ॥ ४ ॥ उस याजक ने उस पुत्र का बध करके विधि पूवेक उसकी चरबी का हवन कर दिया चरबी के हवन किये जाने पर मातायें गन्ध को सूंघ कर ॥ ५ ॥ व्याकुल होकर अचानक जमीन पर गिर पड़ीं । उसके पश्चात् वे सब स्त्रियें गर्भवती होगईं ॥ ६ ॥

बकरे के मांस काहवन अर्थात् अजामेध यज्ञ

(नं० २)

ऋषय ऊचु—

धान्यैर्यष्टव्याभिव्येवपक्षोऽस्माकं नराधिप ।
देवानां तु पशु पक्षो मतो राजन् वदस्वनः ॥ १२ ॥

भीष्म उवाच—

देवानां तु मतं ज्ञात्वा वसुना पक्ष संश्रयात् ।
छगेनाजेन यष्टव्यमेव मुक्तं वचस्तदा ॥ १३ ॥

(महा० शान्ति० अ० ३३७)

अर्थ—ऋषियों ने राजा वसु से कहा कि हे राजन् हमारा यह पक्ष है कि अन्न से हवन करना चाहिये। और देवताओं का यह पक्ष है कि पशू से हवन करना चाहिये। आप इस विषय में फैसला दें कि कौनसा पक्ष ठीक है ॥ १२ ॥ भीष्म बोले कि राजा वसु ने देवताओं के पक्ष को जान कर और उसका आश्रय लेकर यह फैसला दिया कि छाग अर्थात् बकरे से हवन करना चाहिये ॥ १३ ॥

घोड़े की चरबी से हवन अर्थात् अश्वमेध यज्ञ

(नं० ३)

नियुक्तास्तत्र पशव स्तत्तदुद्दिश्य दैवतम् ।
उरगाः पक्षिणश्चैव यथा शास्त्रं प्रचोदिताः ॥ ३० ॥
शामित्रेतु हयस्तत्र तथा जलचराश्चये ।
ऋषिभिः सर्वमेवैतन्नियुक्तं शास्त्रतस्तदा ॥ ३१ ॥
पशूनां त्रिशतं तत्र यूपेषु नियतं तदा ।
अश्व रत्नोत्तमं तत्र राज्ञो दशरथस्य ह ॥ ३२ ॥

कौसल्या तं हयं तत्र परिचर्य समन्ततः ।
कृपाणैर्विशशासैनं त्रिभिः परमयामुदा ॥ ३३ ॥
पतत्रिणस्तस्य वयामुद्धृत्य नियतेन्द्रियः ।
ऋत्विक् परम सम्पन्नः श्रपयामास शास्त्रतः ॥ ३६ ॥
धूमगंधं वपायास्तु जिघ्रतिस्म नराधिपः ।
यथा कालं यथा न्यायं निर्णुदन् पापमात्मनः ॥ ३७ ॥
हयस्य यानि चांगानि तानि सर्वाणि ब्राह्मणाः ।
अग्नौ प्रास्यन्ति बिधिवत्समस्ताः षोडशर्त्विजः ॥ ३८ ॥
(बाल्मी० बाब० स० १४)

अर्थ—वहां यज्ञ में प्रत्येक देवता का उद्देश्य रख कर पशु नियत किये गये और शास्त्र की आज्ञा के अनुसार सांप और पक्षी भी नियत किये गये ॥ ३० ॥ ऋषियों ने शास्त्र के अनुसार घोड़ा और जल के जानवर भी यज्ञ में नियत किये ॥ ३१ ॥ तब वहां यज्ञ में खम्भों के साथ तीन सौ पशु बांधे गये उनमें राजा दशरथ का अश्वरत्न भी था ॥ ३२ ॥ कौशल्या ने वहां पर उस घोड़े की अच्छी प्रकार सेवा करके उस घोड़े को बड़ी प्रीति से तीन तलवारों से काट दिया ॥ ३३ ॥ तब जितेन्द्रिय चतुर ऋत्विज ने शास्त्र के अनुसार उस घोड़े की चरबी निकाल कर हवन किया ॥ ३६ ॥ उस चरबी के धूँये को न्याय तथा कालानुसार अपने पापों को दूर करने के लिये राजा ने सूंघा ॥ ३७ ॥ उस घोड़े के जो अंग थे उन सब अंगों को सोलह ऋत्विज ब्राह्मणों ने विधि के अनुसार अग्नि में हवन कर दिया ॥ ३८ ॥

गौ मांस से हवन अर्थात् गो मेधयज्ञ

(नं० ४)

यदृच्छया मृतान् दृष्ट्वा गास्तदा नृप सत्तमः ।
एतान् पशून्नय क्षिप्रं ब्रह्म बन्धो यदीच्छसि ॥ ८ ॥
स तूत्कृत्यमृतानां वैमांसानि मुनि सत्तमः ।
जुहाव धृतराष्ट्रस्य राष्ट्रन्नरपतेः पुरा ॥ ११ ॥

(महा० शल्य० अ० ४१)

छिन्न स्थूनं वृषं दृष्ट्वा विलापं च गवां भृशम् ।
गोगृहे यज्ञवाटस्य प्रेक्षमाणः स पार्थिवः ॥ २ ॥
स्वस्ति गोभ्योऽस्तु लोकेषु ततो निर्वचनं कृतम् ॥ ३ ॥

(महा० शान्ति० अ० २६४)

अर्थ—श्रेष्ठ राजा ने इच्छा पूर्वक गौओं को मरा हुआ देख कर कहा कि हे ब्राह्मण यदि तेरी इच्छा हो तो इन पशुओं को शीघ्रता से लेजा ॥ ८ ॥ उस श्रेष्ठ मुनि ने तो उन मरी हुई गौओं के मांस को काट काट कर राजा धृतराष्ट्र के सामने उसके राष्ट्र के लिये हवन कर दिया ॥ ११ ॥ राजा बिचक्षनु ने यज्ञ की गौशाला में गौओं के अत्यन्त विलाप को सुन कर और यज्ञशाला में कटे हुये वृक्ष की भांति बैलों को कटा हुआ देख कर ॥ २ ॥ यह कहा कि संसार में गौओं के लिये कल्याण हो ॥ ३ ॥

पुरोहितों का कुमारियों से मखौल

(नं० ५) अध्वर्यु ब्रह्मोग्दातृहोतृक्षत्तारः कुमारी पत्निभिः संवदन्ते यकासकाविति । कुमारी पत्निभिः सह सोपहासं वदन्ते । तत्र प्रथममध्वर्युः कुमारीं पृच्छति कुमारि हये हये कुमारि । अङ्गुल्या योनिं प्रदेशयन्नाह यका या अस्कौ असौ शकुन्तिका अल्पपक्षिणीव आहलक् शब्दनुकरणम् । हले हले इति शब्दयन्ति वञ्चति गच्छति । स्त्रीणां शीघ्र गमने योनौ हलहला शब्दो भवतीत्यर्थः । भगे योनौ यदा शकुनिसदृश्यां पसोलिंगमाहन्ति आगच्छति । यदा भगे शिश्नमागच्छति तदा धारका धरतिलिङ्गमिति धारका योनिर्निगल्गलीति नितरां गलति वीर्यं क्षरति । यद्वानुकरणम् । गल्गलेति शब्दं करोति ।। महीधर यजु० २३ । २२

अर्थ—अध्वर्यु' ब्रह्मा' उग्दाता' होता और क्षत्ता लोग यज्ञ में यजमान की पत्नियों और कुमारी कन्याओं से मखौल करते हुवे हंसते हैं पहिले अध्वर्यु अंगुली से योनि की तरफ इशारा करके कहता है । कि स्त्रियों के चलते समय उन की योनि में चिड़िया विशेष की आवाज की भांति हल हल शब्द होता है और जब योनि में लिङ्ग घुसता है तब योनि निरन्तर वीर्य छोड़ती है और गल गल शब्द करती है ।

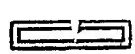

कुमारियों का पुरोहितों से मखौल

(नं० ६) कुमारीं अध्वर्यु प्रत्याह। अङ्गुल्या शिश्नं प्रदर्शयन्त्याह हे अध्वर्यो यकः वः असकौ असौ शकुन्तकः पक्षीव विवक्षतः वक्तुमिच्छतस्ते तव मुखमिव आहलगिति वञ्चति इतस्ततश्चलति अग्रभागे सच्छिद्रं लिङ्गं तव मुखमिव भासते अतो नोऽस्मान् प्रति मा अभिभाषथाः मावद तुल्यत्त्वात्॥ महीधर यजु० २३।२३

अर्थ—कुमारी अध्वर्यु को जवाब देती है। और अंगुली से लिंग की तरफ इशारा करके कहती है कि हे अध्वर्यु चिड़िया विशेष की भांति तेरा मुख भी बोलते हुवे हल हल शब्द करता है और तेरा यह सुराख समेत लिंग मुख की भांति प्रतीत होता है। इस लिये तू हमारे साथ मत बोल। क्यों कि तेरा और हमारा हिसाब बराबर ही है।

चूंकि वेद में प्रातर्यावानोऽध्वरमित्यादि यजु० ३३। १५ में यज्ञ के लिये अध्वर शब्द आता है। जिस से यह जाना जाता है यज्ञ उसी को कहते हैं। जिस में हिंसा न हो। अतः पौराणिक यज्ञों के विषय में "दया धर्म दान के स्थान पर प्राणियों के क़त्ले आम का ज़ता" ही कहना उचित है।

पौराणिक यज्ञशाला
अर्थात्
दया धर्म दान के सिर
पर क़त्ले आम का
जूता
नं० १
नं० ६
नं० ४
नं० २
नं० ५
नं० ३

दिमाग़ में गंदगी [दयानन्द भाव चित्रा० चित्र नं० ६]

के उत्तर में

पौराणिक हस्पताल

पौराणिक दम्भ—दयानन्द भाव चित्रावली में एक स्त्री तथा पुरुष की तसवीर बनाई गई है। स्त्री ने पुरुष तथा पुरुष ने स्त्री के चूतड़ों पर हाथ रक्खा हुआ है। गोया ये दोनों एक दूसरे की अपान वायु की रक्षा कर रहे हैं और प्रमाण यह दिया है कि स्वामी दयानन्द जी ने यजु० १४। ८ के भाष्य में लिखा है कि हे पुरुष वा स्त्री तू मेरे अपान वायु की रक्षा कर।

राम पूजा और शैतान की तालीम—स्वामी दयानन्द ने विषय सम्बन्धी सभी प्रकार का विवेचन किया था। इसी लिये सत्यार्थ-प्रकाश में योनि संकोचन वीर्याकर्षण विधि सालब मिश्री के नुसखे का प्रयोग लिखा पृ० १२६ पं० ५

शिव पूजा और दयानन्द की तालीम—महर्षि कुब्वत बाह के कमजोर हो जाने पर कुशता अबरक फांकते और पारे की गोलियां खाते नजर आयेंगे। पृ० ४३ पं० ५।

वैदिक बम्ब—वेद में आता है कि—

(१) अपानं मेपाहि॥ यजु० १४। ८॥

हे पते वा स्त्री तू मेरे नाभि के नीचे गुह्येन्द्रिय मार्ग से निकलने वाले अपान वायु की रक्षा कर।

भावार्थ—स्त्री-पुरुषों को चाहिये कि स्वयंवर विवाह करके अति प्रेम के साथ आपस में प्राण के समान प्रिया चरण शास्त्रों का सुनना औषधि आदि का सेवन और यज्ञ के अनुष्ठान से वर्षा करावें। (दयानन्द भाष्य)

मनुष्य के पेट में खराबी होने से अपान वायु बिगड़ जाता है उसकी रक्षा अर्थात् शुद्धि औषधि सेवन से होती है। अतः इस मन्त्र में स्त्री-पुरुष दोनों के लिये शिक्षा है कि वे औषधवत अन्न सेवन तथा एक दूसरे के लिये औषधियों का प्रयोग करके एक दूसरे की अपान वायु की रक्षा करें। अर्थात् एक दूसरे की अपान वायु को बिगड़ने न दें। इस भाव को महीधर ने नहीं समझा अतः महीधर ने अर्थ किया कि—

हे इष्टके त्वं मेमम प्राणं प्राणरूपं वायुं पाहियालय। एवं पानं मम पाहि

हे ईंट तू मेरे प्राण वायु की रक्षा कर इसी प्रकार अपान वायु की भी रक्षा कर।

अब आप ही बतावें कि ईंट प्राण तथा अपान वायु की कैसे रक्षा करेगी। आपके विचार से यदि ईंट का यजमान के मुख

तथा गुदा में ठोंक दिया जावे तभी प्राण तथा अपान वायु की रक्षा कर सकती है। शरम शरम शरम

(२) औषधि का सेवन केवल कुव्वते बाह के लिये ही नहीं होता अपितु शारीरिक निर्बलता को दूर करने तथा रोग निवृत्ति के लिये भी होता है। स्वामी जी यदि अबरक का कुश्ता या कोई और औषधि सेवन करते थे तो रोग निवृत्ति के लिये करते थे। विरोधियों ने स्वामी जी को कई बार विष दिया जिससे स्वामी जी का शरीर रोगी होगया था तथा जब वे बरफ के पहाड़ों पर भ्रमण करते थे तब उनके मस्तिष्क पर सरदी ने हानि पहुंचाई थी बस इसी कारण वे औषधि सेवन करते थे।

(३) यह आवश्यक नहीं है कि सब बातों का तजुरबा अपने पर ही आजमाने से हो दूसरों के तजरुबे से भी फायदा उठाया जाता है। डाक्टर जो सब मरजों का इलाज करते हैं क्या वे सब मरजों में मुबतला हो चुके होते हैं। हर्गिज नहीं। वेद में आता है कि—

सुमित्रया न आप औषधयः सन्तु ॥ यजु० ६। २२ ॥

विष्णुर्योनिं कल्पयतु ॥ अथर्व० ५। २५। ५ ॥

हमारे लिये औषधियें कल्याणकारी हों। परमात्मा योनि को कल्याणकारी बनावे।

इस वेद शिक्षा के अनुकूल स्वामी जी ने योनि संकोचन वीर्याकर्षण तथा सालव मिश्री के नुसखे का उपदेश किया। आपके मतानुसार जो आपके ग्रन्थों में इस प्रकार के नुसखों का वर्णन है

तो क्या व्यासादि ऋषियों ने इनका स्वयं अनुभव करके लिखा है नुसखे तथा चित्र देखने की कृपा करें।

स्त्री का वश करना

(नं० १) भौमवारे लवङ्गं च लिंग छिद्रे विनिक्षिपेत।
बुधे निष्कास्य ताम्बूले दद्यात् सा वशगा भवेत ॥ ६ ॥

अर्थ—मंगल के दिन अपने लिंग के छिद्र में लौंग रक्खे और बुधवार को निकाल ले फिर उस लौंग को पान में रखकर जिस स्त्री को दे वह वश में हो जाय ॥ ६ ॥

[दत्ता त्रेय तन्त्रम् अष्टमः पटलः]

योनि संकोचन

(नं० २) शंख पुष्पी वचा मांसी सोमराजी च फल्गुकम्। ६।
माहिषं नवनीतं च त्वेकी कृत्य भिषग्वरः।
समूलानि सपत्राणि क्षीराज्येन पेषयेत। ७।
गुटिकां शोधितां कृत्वा नारी योन्यां प्रवेशयेत।
दशवारं प्रसूतापि पुनः कन्या भविष्तति। ८।

[गरुड़ पुराण आचार काण्ड अध्याय १८०]

अर्थ—शंख पुष्पी, वच, जटामांसी, सोमराजी, फल्गु और भैंस का मक्खन इन सब को इकट्ठा करके वैद्य को चाहिये कि मूल और पत्तों समेत दूध और घी से पीसकर शुद्ध करके गोलियां बनाकर स्त्री को योनि में डाल देवे। यदि स्त्री दस बार भी औलाद पैदा कर चुकी हो तब भी वह इन गोलियों से फिर से कन्या बन जावेगी।

योनि संकोचन

(नं० ३) कपूर-मदन-फल मधुकैः पूरितः शिव।
योनिः शुभा स्याद् वृद्धाया युवत्याः किं पुनर्हर। १६।
[गरुड़ पुराण आचार कांड अध्याय २०२]

अर्थ—काफूर तथा मैनफल इन दोनों को पीस कर शहद में मिला कर यदि स्त्री की योनि में भर दिया जावे तो हे शिव ! बूढ़ी औरत की योनि भी बढ़िया होजाती है तो फिर जवान औरत की योनि का तो कहना ही क्या है।

लिंग वर्धन

(नं० ४) वराह वयसा लिंगं मधुना सह लेपयेत्।
स्थूलं दृढं दीर्घ लिंगं जायते मुसलोपमम्। १२।

अर्थ—शूकर की चर्बी और शहद एक में मिला कर लिंग पर लेप करने से लिंग मूसल के समान मोटा मजबूत और लम्बा हो जाता है॥ १२॥

चूंकि औषधि का सदुपयोग वेदानुकूल तथा दुरुपयोग वेद विरुद्ध होने से पाप है। अतः इस प्रकार के पौराणिक नुसखों को "औषधि प्रयोग के शिर पर दुरुपयोग का जूता" ही कहना उचित प्रतीत होता है।

पौराणिक हस्पताल अर्थात् औषध प्रयोग के सिर पर दुरुपयोग का जूता

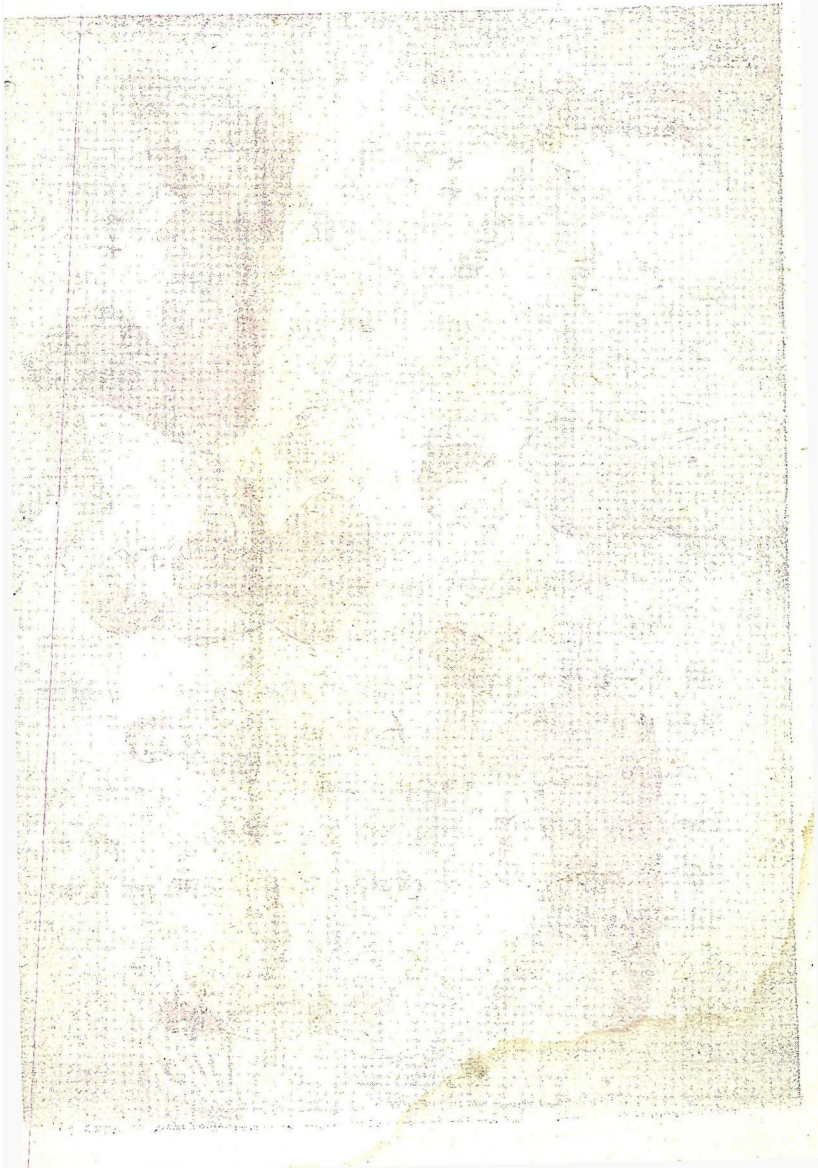

बीसवीं सदी में रिफारमर की पहिचान [दयानन्द भाव चित्रावली चित्र नं० १]

पौराणिक त्रिदेव परिचय

पौराणिक दम्भ—दयानन्द भाव चित्रावली में स्वामी दयानन्द की तसवीर देकर सिद्ध किया है कि स्वामी जी सबको गाली देने वाले बीसवीं सदी के रिफारमर थे। प्रमाण में सत्यार्थ प्रकाश के कुछ उदाहरण पेश किये हैं जिनमें विधर्मियों पर आलोचना की गई है।

शिव पूजा और दयानन्द की तालिम—महबूबा का गैर की बगल में बैठना बरदाशत नहीं कर सके। मायूस होकर वह खुद बखुद चाहे लण्डन चली ही जाय। (पृ० ४३ पं० ५)

मैं तो रमाबाई की लड़की को भी जो अभी जिन्दा है योग का एक करिश्मा ही समझता हूं। (पृ० ४५ पं० २०)

राम पूजा और शैतान की तालीम—एक माह पास रखने के एवज रण्डियों को सौ सौ रुपया फीस देने वालों। पृ०५६ पं० १६

जिनका जरनैल नन्हीं के हाथों शहीद हुवा। पृ० ६२ पं०६

रमावाई को दुशाले में सुलाता था ऋषि। पृ० ६८ पं०३
अब तो थी उसके काबू में वह सैदे बैनवा।
बस फिर क्या था उसके थी आगौश में वह··· (परी)

पृ० १३४ पं० १२

वैदिक दम्भ—जो वस्तु जैसी हो उसको वैसी बताना स्तुति तथा उसके विपरीत बताना निन्दा या गाली कहाती है। स्वामी जी ने अन्य मतों की आलोचना करते हुवे उनके विषय में यथार्थ लिखा है। उसे निन्दा या गाली नहीं कहा जा सकता। यदि यथार्थ लिखने का नाम भी निन्दा या गाली मान लिया जावे तो संसार में ऐसी एकभी धार्मिक पुस्तक न मिलेगी। जिसमें पाप कर्मों तथा पापियों की आलोचना न की गई हो। तो क्या फिर ये सारी पुस्तकें तथा उनके कर्ता गाली देने वाले रिफारमर ही माने जावेंगे। हरगिज नहीं। हां पौराणिक साहित्य में अवश्य ऋषि मुनियों तथा महात्माओं के विरुद्ध झूठी बातें लिखी गई हैं। अतः पुराणों के कर्ता को अवश्य गालियां देने वाला रिफारमर कहा जा सकता है। पुराणों की कुछ गालियां पढ़ने की कृपा करें।

(१) ब्रह्मा पुत्रो गामी थे।
(२) विष्णु मातृ गामी थे।
(३) महादेव भगिनी गामी थे।
(४) सूर्य्य भतीजी गामी थे।

भविष्य० प्रतिसर्ग० खं० ४ अ० १८

(५) कृष्ण मातुल पत्नि गामी थे। (ब्रह्मवै० प्रकृति अ० ४६)
श० ३६-४१

(६) चन्द्रमा गुरु पत्नि गामी थे। (भविष्य० उत्तर० अ०६६)

(७) वृहस्पति भ्रातृपत्नि गामी थे। (महा० आदि० अ० १०४)

इत्यादि २ अनेकों गालियां पुराणों में भरी पड़ी हैं। अब आप ही इन्साफ से बतावें कि गालियां देने वाले स्वामी जी थे या पुराणों के बनाने वाले कलयुगी रिफारमर।

(२) महाराजाधिरा जजोधपुर वेश्या गामी थे। स्वामी जी के उपदेश स राजा ने रंडी का त्याग कर दिया। इस पर रंडी ने साज़िस करके स्वामी जी को ज़हर दिलवा दिया। जिस से स्वामी जी की मौत हुई। भला स्वामी जी का क्या क़सूर था। इस घटना से स्वामी जी को "नन्ही के हाथों शहीद" कहना पौराणिक पाजीपन नही तो क्या है। भला यह तो बताइये कि स्वामी शंकराचार्य की मोत भगन्दर रोग से हुई कृष्ण की को भील ने तीर मार कर शहीद कर दिया तथा राम की मौत सरयू में डूबने के कारण हुई। क्या आप इन महात्माओं की मौत के विषय में भी किन्ही करतूतों की ही कल्पना करने का पाजी पन दिखायेंगे। जैसा कि आप ऋषि दयानन्द जी की मौत के विषय में दिखा रहे हैं।

हां पौराणिकों में रण्डी बाज ऋषि और देवता अवश्य मौजूद थे जैसे कि

(१) महादेव जी ने नन्दा वेश्या से गमन किया।

(शिव० शत रुद्र० अ० २६)

(२) विश्वामित्र ने मेनका वेश्या से गमन किया।
(३) ऋष्यशृंग ने वेश्या गमन किया।

{ भविष्य० प्रति सर्ग० खं० ४ अ० २८ }

(४) यदि वेश्या इतवार के दिन ब्राह्मणों के लिये बिना फीस खुली छुट्टी करदे तो वे विष्णु लोक को चली जावेगी।

(भविष्य० उत्तर १११)

(५) कृष्ण ने कुब्जा को रात भर इतना रगड़ा कि दिन निकलने से पहिले उसके प्राण निकल गये।

(६) पराशर ने कुमारी कन्या सत्यवती को किश्ती में ही रगड़ डाला जिससे व्यास जी पैदा हुवे।

(७) सूर्य्य ने कुमारी कन्या कुन्ती से जबरन समागम किया जिस से कर्ण पैदा हुवे

इत्यादि अनेक घटनायें पुराणों में मौजूद हैं। अब आप ही बतलायें कि वेश्या गामी तथा व्यभिचारी स्वामी दयानन्द जी थे, या पौराणिक ऋषि और देवता

रमा बाई एक महाराष्ट्री ब्राह्मण की लड़की थी। संस्कृत की विदुषी थी वह एक बंगाली कायस्थ से शादी करना चाहती थी। मां बाप ने पौराणिक होने के कारण उसे त्याग दिया था स्वामी जी ने जब उसकी विद्या की प्रसिद्धि सुनी तो उससे

पत्र व्यवहार किया कि यदि वह ब्रह्मचारिणी रह कर देश की स्त्रियों में वैदिक धर्म्म का प्रचार कर सके तो आर्य्य समाज उसके मार्ग व्यय तथा निर्वाह का प्रबन्ध कर सकता है। और उसके व्याख्यान सुनने के लिये उसे मेरठ बुलाया। जब वह मेरठ आई तो उसके साथ एक स्त्री तथा दो पुरुष थे जिन में वह बङ्गाली महाशय भी थे जिन से रमाबाई शादी करना चाहती थी। उसे मेरठ शहर के अन्दर पृथक स्थान में ठैहराया गया। स्वामी जी शहर से बाहर बारीचे में ठहरे हुवे थे। स्वामी जी के पास पांच छै शिष्य सांख्यादि दर्शन पढते थे। उन्हीं में बैठ कर कई दिन तक रमाबाई ने भी सांख्य शास्त्र का अध्ययन किया। रमाबाई के शहर में कई दिन व्याख्यान हुवे। जब स्वामी जी के उपदेश से रमाबाई भारत की स्त्रियों में प्रचार करने को रज़ामन्द न हुई। तो मेरठ समाज ने उसे मार्ग व्यय देकर विदा कर दिया, स्वामी जी स्वरचित पुस्तकों का एक सैट रमाबाई को भेंट किया—

बस रमाबाई के विषय में इतनी ही घटना आर्य्य समाज की किताबों में वर्णित है। इस से स्वामी जी का रमाबाई से घृणित संबन्ध कल्पना करना पौराणिक हरामी के बिना और कुछ नहीं कहा जा सकता। यदि इस प्रकार से निर्मूल कल्पना बिना किसी स्पष्ट लेख के की जावे तो किसी के भी आचार का सुरक्षित मानना कठिन हो जावेगा।

(१) अकेला रावण अकेली सीता को उडा कर ले गया। तथा अकेली सीता १० मास रावण के क़बजे में रही।

(बालमी० आरण्य)

(२) जब राम मृग के पीछे गये तो सीता तथा लक्ष्मण के बिना वहां तीसरा कोई न था (बाल्मी० आरण्य)

(३) सीता बाल्मीकि की कुटिया पर अकेली बन में रही और वहां पर ही दो बच्चे पैदा हुवे (बाल्मी० उत्तर)

(४) कुन्ती अकेली एकान्त में दुर्वासा की सेवा करती रही।

(महा० आदि)

(५) विश्वामित्र की लड़की शकुन्तला अकेले कण्व मुनी के पास युवावस्था में रही (महा० आदि)

(६) राजा वसु की पुत्री सत्यवती अकेली युवती होते हुवे दासराज के पास रही (महा० आदि)

(७) शिव जी भील की कुटिया में भील की स्त्री के साथ एक रात अकेले रहे (शिव० शत रुद्र० अ० २७)

(८) पांडवों के १३ वर्ष बन में रहने के दिनों में कुन्ती विदुर के घर में रही (महा० सभा)

इत्यादि सैकड़ों घटनायें इतिहास में भरी पड़ी हैं। तो क्या बिना किसी स्पष्ट लेख के इन घटनाओं से सीतादि के आचार के विषय में घृणित कल्पना करना युक्ति युक्त माना जा सकता है जैसे कि एक पाजी मुसलमान "सीता का छिनाला" नामक पुस्तक के लेखक ने सीता के साथ रावण के घृणित संबंध

की कल्पना की है। हरगिज़ भी नहीं हां पुराणों में इस प्रकार की घटनायें स्पष्ट शब्दों में मौजूद हैं। हम अधिक घटनायें न लिखते हुवे केवल एक कथा का वर्णन करते हैं। अत्रि मुनि की स्त्री अनसूया थी जो बड़ी मानी हुई पतिव्रता थी। जिसने सीता को भी पतिव्रत धर्म का उपदेश किया था। ऐसी पतिव्रता स्त्री से सनातन धर्म के देवताओं ने क्या व्यवहार किया यह अधो लिखित पुराण की कथा में तथा इस चित्र में देखने की कृपा करें।

ब्रह्मा विष्णु महादेव का मैथुनार्थ अनसूया पर आक्रमण

कदाचिद्भगवानत्रिर्गंगाकूलेऽनसूयया।
सार्द्धं तपो महत् कुर्वन् ब्रह्मध्यानपरोऽभवत् ॥ ६७ ॥
तदा ब्रह्मा हरिः शम्भुः स्वस्ववाहनमास्थिताः।
वरं ब्रूहीति वचनं तमाहुस्ते सनातनाः ॥ ६८ ॥
इति श्रुत्वा वचस्तेषां स्वयंभुतनयो मुनिः।
नैव किंचिद्वचः प्राह संस्थितः परमात्मनि ॥ ६९ ॥
तस्य भावं समालोक्य त्रयोदेवाः सनातनाः।
अनसूयां तस्य पत्नीं समागम्य वचोऽब्रुवन् ॥ ७० ॥
लिंग हस्तः स्वयं रुद्रो विष्णुस्तद्र सवद्धनः।
ब्रह्मा कोम्र ब्रह्म लोपः स्थितस्तस्यावशंगतः ॥ ७१ ॥
रतिं देहि मदाघूर्णे नोचेत्प्राणांस्त्यजाम्यहम ॥ ७१ ॥
पतिव्रतानसूया च श्रुत्वा तेषां वचोऽशुभम्।

नैव किंचिद्वचः प्राह कोपभीतासुरान् प्रति ॥ ७२ ॥
मोहितास्तत्र ते देवा गृहीत्वा तां बलात्तदा ।
मैथुनाय समुद्योगं चक्रुर्माया विमोहिताः ॥ ७३ ॥
तदा क्रुद्धा सती सावै ताञ्छशाय मुनिप्रिया ।
मम पुत्रा भविष्यन्ति यूयं काम विमोहिताः ॥ ७४ ॥
महादेवस्य वैलिंगं ब्रह्मणोऽस्य महाशिरः ।
चरणौ वासुदेवस्य पूजनीया नरैः सदा ॥ ७५ ॥
भविष्यन्ति सुरश्रेष्ठा उपहासोऽयमुत्तमः ॥ ७५ ॥
इति श्रुत्वा वचो घोरं नमस्कृत्य मुनिप्रियाम् ॥ ७६ ॥
तत्पाप परिहारार्थं योगवन्तो बभूविरे ॥ ७८ ॥

(भविष्य० प्रति सर्ग० खं० ४ अ० १७)

अर्थ—किसी समय में गंगा के किनारे पर भगवान अत्रि अपनी धर्म पत्नी अनसूया के साथ महान तप करते हुये परमात्मा के ध्यान में मग्न थे ॥ ६७ ॥ तब ब्रह्मा विष्णु तथा महादेव सनातन धर्म के तीनों देवता अपनी २ सवारियों पर सवार होकर उस अत्रि से आकर कहने लगे कि कोई वर मांगो ॥ ६८ ॥ स्वयम्भु का पुत्र अत्रि उनकी इस बात को सुनकर कुछ भी नहीं बोला क्यों कि वह परमात्मा के ध्यान में लगा हुआ था ॥ ६९ ॥ सनातन धर्म के तीनों देवता अत्रि के इस भाव को देख कर उसकी पत्नी अनसूया के पास जाकर कहने लगे ॥ ७० ॥ महादेव जी लिंग हाथ में पकड़े हुये और विष्णु जी उसके रस को बढ़ाते हुये और ब्रह्मा जी कामवश होकर वेद का लोप किये हुये तीनों उस अनसूया के वश

पतिव्रता नार के
सिर पर व्यभिचार
का जूता

में हो गये और उनमें से हर एक अनसूया को कहने लगा कि या तो तू मुझे रति का दान दे वरना में अभी प्राणों को छोड़ता हूँ ॥७१॥ पतिव्रता अनसूया ने उनके अशुभ बचनों को सुन करदे बताओं के शाप से डरते हुये कुछ भी नहीं कहा ॥ ७२ ॥ वहां पर वे तीनों देवता काम वश होकर और अनसूया को जबरदस्ती पकड़ कर मैथुन करने का उद्योग करने लगे ॥ ७३ ॥ तब उस मुनि की प्यारी स्त्री सती अनसूया ने क्रोध में आकर उनको शाप दिया कि तुम काम से मोहित हुये मेरे पुत्र बनोगे ॥ ७४ ॥ महादेव का लिंग ब्रह्मा का शिर तथा विष्णु के पैर लोग सदा पूजेंगे। इससे संसार में तुम्हारा मखौल होगा ॥ ७५ ॥ इस घोर वाणी को सुनकर तीनों ने मुनि की प्यारी स्त्री को प्रणाम करके ॥ ७६ ॥ उस पाप को दूर करने के लिये योगाभ्यास करने लगे ॥ ७८ ॥

चूंकि अनसूया एक आदर्श पतिव्रता स्त्री थी जिसने सीता को भी पतिव्रत धर्म का उपदेश किया। अतः भविष्य पुराण का यह लेख "पतिव्रता नारि के सिर पर व्यभिचार का जूता" ही कहा जा सकता है।

उपाधि वितर्णोत्सव

(दयानन्द भाव चित्रावली चित्र नं० ११)

के उत्तर में

शिव की सेवकों पर कृपादृष्टि

पौराणिक दम्भ — दयानन्द भाव चित्रावली में तस्वीर बना कर इस बात पर मखौल उड़ाया है कि स्वामी जी ने यजु० १६। ५२ तथा यजु० १४।६ में भाष्य करते हुवे राजा को सूअर वैश्य को ऊँट शूद्र को बैल तथा नौकर को पशु की उपमा दी है। और इसीको वितर्णोत्सव का नाम दिया है और मनुष्य शरीर पर सूअर बैल तथा ऊँट और पशु का शिर लगा कर मखौल किया है।

वैदिक बम्ब—यजुर्वेद में आता है कि—

बिभ्रिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः

॥ यजु० १६।५२ ॥

हे विशेष कर सूअर के समान सोने का उत्तम सूअर की

निन्दा करने वाले विविध पदार्थों को आरूढ़ ऐश्वर्य युक्त सभा पते राजन्! आपको सत्कार प्राप्त हो (दयानन्द भाष्य)

पष्टवाड्वयो बृहतीछन्द उक्षावया ककुप छन्द ऋषभोवयः सतो बृहती छन्दः॥ यजु० १४। ६॥

पीठ से बोझ उठाने वाले ऊँट आदि के सदृश वैश्य बड़े बल-युक्त पराक्रम को प्रेरणा कर सीचने हारे बैल के तुल्य शूद्र तू अति बल का हेतु दिशाओं और आनन्द को शीघ्रगन्ता पशु के तुल्य भृत्य तू बल के साथ उत्तम बड़ी स्वतन्त्रता की प्रेरणा कर।

(दयानन्द भाष्य)

उपमालंकार में उपमान तथा उपमेय में साधारण धर्म की ही समानता ली जाती है। अर्थात् जब किसी पदार्थ को किसी से उपमा दी जाती है। तो उसका उतना ही हिस्सा लिया जाता है। जितना कहने वाले का मकसद हो। अर्थात् यदि हम किसी मनुष्य को शेर से उपमा देते हैं। तो उससे हमारा इतना मक़सद होता है कि वह शेर की भांति बहादुर है हमारा यह मकसद हरगिज नहीं होता कि वहशेरकीभांति दरिन्दा मांसाहारी या हैवान है। यदि हम किसी गैर की स्त्री माता कहें तो उसका यही मतलब होता है कि हम आपकी माता के समान इज्जत करते हैं हमारा यह मतलब हर्गिज नहीं होता कि आप हमारे बाप की बीवी हैं। इसी प्रकार से यहां वेद भाष्य में भी साधारण धर्म की ही समानता ली जावेगी।

(१) राजा को सूअर के दो गुणों से उपमा दी गई है। एक तो सूअर बहादुर होने से निर्भय होता है और बे फिकरी से सोता है। अतः राजा को उपमा दी गई है कि "हे सूअर के समान निर्भय होकर सोने वाले राजन्" दूसरी उत्तम सूअर की निन्दा करने वाले अर्थात् "शूर वीर सूअर को भी पराजित करने वाले बहादुर राजन्।"

हे वैश्य ! जैसे ऊँट पीठ पर बोझ लाद कर देश देशान्तर में पहुँचा देता है। वैसे तू भी देश देशान्तर की वस्तुओं को व्यापार द्वारा दूसरे देशों में प्राप्त कर और इससे बड़े बल युक्त पराक्रम को प्रेरणा कर अर्थात् पुरुषार्थी होकर व्यापार का काम कर।

(३) हे शूद्र जैसे बैल कूप में हर्ट के द्वारा दूर दूर खेतों को सींच कर स्वामी को धन बल से युक्त करके उसके यश को देश देशान्तर में फैला कर स्वामी को आनन्दित करता है वैसे तू भी स्वामी की सेवा द्वारा धन जन शक्ति को बढ़ा कर उसके यश को फैलाकर उसे आनन्दत कर।

(४) हे भृत्य तू भी जैसे पशु बड़े बल से स्वामी का काम करके उसे सुख पहुँचाता है वैसे अपने स्वामी का बल पूर्वक उत्तम काम करके तथा युद्ध में तन मन लगा कर विजय द्वारा अपने स्वामी को स्वतन्त्रता प्राप्त करवा। कैसी बढ़िया उपमा द्वारा वेद ने वैश्य शूद्र भृत्य तथा राजा को शिक्षा दी है। वेद की ऐसी उत्तम शिक्षा पर मखौल उड़ाना नास्तिक पौराणिक गुण्डों का ही

काम है। शरीफ़ आदमियों का नहीं। श्रीमान जी यहां पर तो वेद ने राजा वैश्य शूद्र तथा भृत्य को सूअर ऊँट बैल तथा पशु की उपमा ही दी है और वह भी प्रशंसनीय साधारण धर्म की समानतां से। किन्तु आपके यहां तो मच्छ कच्छ तथा सूअर के शरीर को स्वयं परमेश्वर ने धारण किया। तथा नरसिंह अवतार का धड़ आदमी का मुख शेर का, गणेश का धड़ आदमी का मुख हाथी का, रुद्र का धड़ आदमी का मुख बकरे का। क्या आप ने वैदिक उपमाओं का मखौल उड़ाते समय इन क़लमी देवताओं को भी याद कर लिया था वा नहीं। अब रह गई बात केवल उपाधि वितरण की सो वेद ने तो राजा वैश्य, शूद्र तथा भृत्य को सूअर ऊँट, बैल तथा पशु के उत्तम गुणों से उपमा देकर प्रशंसा की है किंतु आपके शिवजी महाराज ने तो अपनी माया से अपने सेवकों को मोहित करके कुकर्म में डाल कर नरक में ही धकेल दिया। जैसे लिखा है कि—

शिव की माया के प्रभाव से काम मोहित होकर—

(१) विष्णु ने बहुत वार पर स्त्री गमन किया
(२) इन्द्र ने गौतम की स्त्री अहिल्या से व्यभिचार किया
(३) वायु देवता भी कामाधीन होगये
(४) अग्नि देवता भी कामी बन गये
(५) सूर्य ने घोड़ी से व्यभिचार किया
(६) चन्द्रमा ने गुरु की स्त्री से व्यभिचार किया

(७) मित्र तथा वरुण उर्वशी पर मोहित होगये

(८) ब्रह्मा का पुत्र दक्ष बहिन पर आशिक हो गया

(९) ब्रह्मा ने अपनी तथा पराई लड़कियों से मुँह काला किया

(शिव० उमा० अ० ४)

यहां पर शिव की माया का बड़ा लम्बा चौड़ा वर्णन है, शिव जी महाराज ने यहां पर कोई भी भला आदमी कृपा किये बिना नहीं छोड़ा तथा गीता में अ० ९ श० ३२ में स्त्री तथा वेश्या को पापयोनि बताया है क्या सनातन धर्मी वैश्य अपने आप को पाप योनि की उपाधि को बुरा नहीं समझते। तथा गीता अ० ५ श० १८ में ब्राह्मण को गौ, हाथी, कुत्ते तथा चाण्डाल तक की उपाधि प्रदान की गई है, क्या पौराणिक ब्राह्मण अपने आप को कुत्ते तथा चाण्डाल के समान समझते हैं। इसका नाम है पौराणिक उपाधि वितर्णोत्सव। यदि आप इसे पढ़ लेते तो आप को दयानन्द भाष्य भानु पर मिथ्या पौराणिक अन्धकार के कल्पना करने की जरूरत ही न पड़ती।

प्रार्थना की पराकाष्ठा

(दयानन्द भाव चित्रावली चित्र न० ८)

के उत्तर में

पौराणिक लपोड़ शंखों की लबड़ धौं धौं

पौराणिक दम्भ—दयानन्द भाव चित्रावली में स्वामी जी तथा चार पांच और आदमियों से प्रार्थना करते हुए दिखा कर यजु० ३०।२१ की दयानन्द भाष्य प्रार्थना पर मखौल उड़ाया गया है।

वैदिक बम्ब—यजुर्वेद का भाष्य इस प्रकार से है कि—

हे परमेश्वर वा राजन् पृथ्वी के लिये बिना पगों के कढिरिके चलने वाले सांप आदि को। आकाश और पृथ्वी के बीच में खेलने के लिय बांस से नाचने वाले नट आदि को। सूर्य के ताप प्रकाश मिलने के लिये बन्दर की सी छोटी आंखों वाले शीत प्रायः देशी मनुष्यों को। दिन के लिये शुद्ध पीली आंखों वाले को उत्पन्न कोजिये। वायु को स्पर्श के अर्थ भंगी को। क्रीड़ा के अर्थ प्रवृत्त हुए गंजे को। राज्य विरोध के लिये प्रवृत्त हुवों के लिये कबरों को और अन्धकार के प्रवृत्त हुवे काले रंग वाले पीले नेत्र से युक्त पुरुष को दूर कीजिये। [यजु० ३०।२१ दयानन्द भाष्य]

कैसी सुन्दर प्रार्थना है कि हे परमेश्वर वा राजन्·

[१] पृथ्वी के अन्दर बाहर से जहरीली हवा को चूस कर मनुष्यों के सांस के काबिल वायु को शुद्ध बनाने के लिये सांपादि जहरीले जानवरों को।

[२] आकाश और जमीन के बीच में बांसादि साधनों से स्वयं कसरत करने तथा कसरत का देश में प्रचार करने वाले नट आदि कसरती पहलवानों को।

[३] सूर्य की तेजी को बरदास्त करने वाले और रोशनी को ग्रहण करने वाले शीत प्रायः देश में रहने वाले बांदर जैसी छोटी आंखों वाले को।

[४] दिन में भली भांति काम करने के काबिल शुद्ध विशाल पीली आंख वाले को।

उत्पन्न कीजिये

[१] दुर्गन्ध युक्त वायु से अर्थात् ग़लीज रहने वाले भंगी को

[२] क्रीड़ा करने वालों में से गंजे को अर्थात् गंज रोग को।

[३] राज्य का विरोध करने वाले तथा नेत्रों में कबरेपन का रोग रखने वाले को।

[४] जिस काले रंग वाले पुरुष के रोग से पीले नेत्र होगये हों। तथा वे अन्धकार के लिये प्रवृत्त होगये हों। अर्थात् अन्धे होगये हों। ऐसे नेत्र वाले को दूर कीजिये। अर्थात हमारे देश में

ऐसे पुरुष पैदा ही न हों। अथवा ऐसे पुरुषों के रोग को दूर किया जावे।

इस मन्त्र में देश के लिये स्वस्थ मनुष्यों तथा स्वास्थ्य के पैदा करने तथा रोगी मनुष्यों अथवा रोगों को दूर करने की प्रार्थना है। कहिये इस प्रार्थना में आक्षेप योग्य कौनसी बात है।

किंतु आपकों वैदिक प्रार्थना क्यों अच्छी लगने लगी क्योंकि आपको तो पौराणिक प्रार्थनाओं के सुनने का अभ्यास है लिजिये हम आपको तृप्त करने के लिये कुछ पौराणिक प्रार्थनायें ही दर्ज कर देते हैं—

(१) कृष्ण जी महाराज स्त्रियों के तो यार हैं और चोरों तथा यारों के सरदार हैं (गोपाल सहस्रनाम)

(२) महादेव जी के सामने पार्वती जी बैठी हैं और पार्वती की गोद में गणेश जी हैं। गणेश जी महाराज महादेव जी के अंगो पर हाथ रख कर पार्वती से पूछ रहे है और पार्वती जी बता रही हैं।

प्रश्न	उत्तर
माता जी पिता की जटाओं में क्या है	गंगा
पिता जी के मस्तक में क्या है	चन्द्रमा
पिता जी के कपाल में क्या है	अग्नि

पिता जी छाती पर कौन लेट रहा है सांप
पिता जी की कमर में क्या है कृत्ति
यह पिता जी की दोनों जांधों के बिच में लंबा सा क्या लटक रहा है। पुत्र की बात को सुन कर पार्वती हंस पड़ी।
इस अवस्था में जो पार्वती लज्जायमान हो रही है वह हमारी रक्षा करे (सुभाषित रत्न भांडागार। पार्वती प्रकरण)

॥ बोलो सनातन धर्म की बेहूदा प्रार्थनाओं की जय ॥

चीर हरण लीला

(३) एक वार गोपियां यमुना नदी पर जाकर कपड़ों को नदी के किनारे रख कर नदी में प्रवेश करके नंगी स्नान करने लगी ! श्री कृष्ण जो महाराज उनके वस्त्र लेकर वृक्ष पर चढ़ गये। जब गोपियों ने वस्त्र मांगे तो कृष्ण जो ने कहा नंगी जल से बाहर आओ तब वस्त्र मिलेंगे। वे बेचारी अपने हाथों से योनि को ढक बाहर आईं और कृष्ण से प्रार्थना करने लगीं कि महाराज अब तो हमारे वस्त्र देने की कृपा करें। तिस पर कृष्ण ने कहा। कि ऐसे वस्त्र नहीं मिलेंगे तुम सब हाथ बांध कर सिर पर रक्खो तब वस्त्र मिलेंगे। यह है पौराणिक प्रार्थना और उसका फल। आप अगले चित्र में इस प्रार्थना के स्वरूप को देखने की कृपा करें। कहिये पौराणिक गुण्डा शाही के बिना और क्या कहा जा सकता है।

(भागवत० दशमस्कं० अ० २२)

चूंकि गोपियों का नंगा स्नान करना तथा कृष्ण का गोपियों को नंगी जल से बाहर निकालना यह दोनों काम ही ऊधने नग्ना जरन्ते ॥ ऋ० ८ । २ । १२ ॥ इत्यादि वेद के विरुद्ध होने से पाप हैं । तथा योगीराज कृष्ण से इस प्रकार का काम किया जाना कतई असंभव है अतः इस घटना को "कृष्णावतार के सिर पर पौराणिक व्यास का जूता" ही कहना उचित है ।

पौराणिक पाठशाला अर्थात् कृष्ण अवतार के सिर पर
पौराणिक सरकार का जूता

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 2861
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र